केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से)

दिसंबर २०२० अंक, वर्ष २४, नं ७६

लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

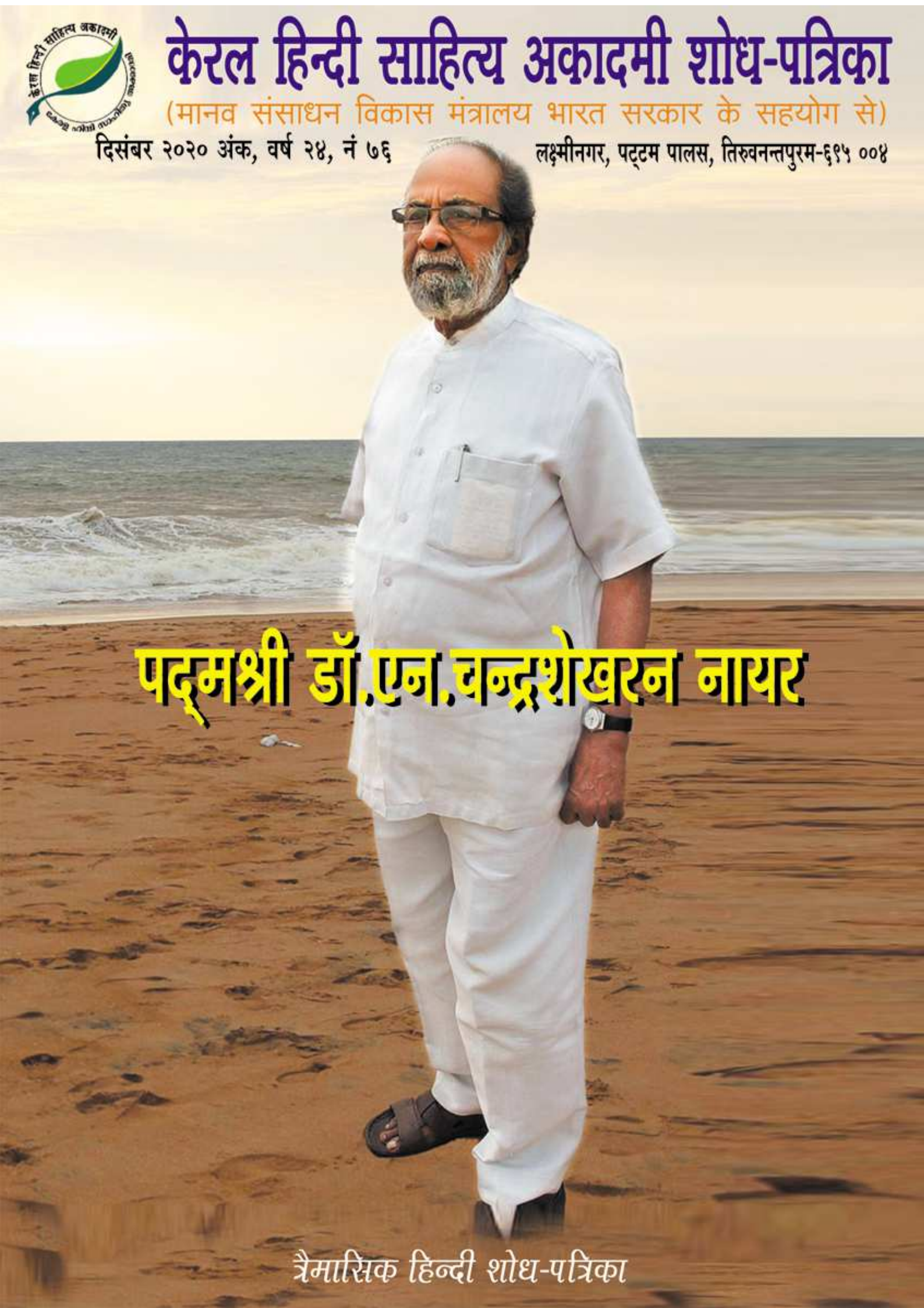

पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

त्रैमासिक हिन्दी शोध-पत्रिका

पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर को यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान 2019-20

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से)

दिसंबर २०२० अंक, वर्ष २५, नं ७६ लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

keralahindisahityaacademy.com www.drnchandrasekharannair.in

मुख्य सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखरन नायर

कार्यकारी सम्पादक

विष्णु आर.एस.

सम्पादक मंडल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० के.पि.उषाकुमारी
डा० एस.सुनन्दा
आर.कृष्णनकुट्टि
डा० आर.राजेशकुमार

संरक्षक

जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर

सम्पादकीय कार्यालय

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी,
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम - 695 004
दूरभाष - 0471 - 2541355

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - 695 004
मूल्य-एक प्रति: 20.00 रुपये
आजीवन सदस्यता : 1000.00 रुपये
संरक्षक : 2000.00

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडु:- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरात:-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटक:-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्रा:- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगाल:-** कलक्कत्ता। **हैदराबाद:-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटी:-** कानपुरा। **नई दिल्ली:-** आर, के पुरम। गोवा:- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

इस अंक में

	लेखन	पृष्ठ सं.
1.	**सम्पादकीय** *डॉ.विष्णु आर.एस.*	5
2.	**गुरुवन्दनम** *जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर*	6
3.	**पद्मश्री से विभूषित भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक एवं हिन्दी सेवी आचार्य डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर** *डॉ.तंकमणि अम्मा*	7
4.	**ഡോ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ 97ന്റെ നിറവിൽ** *ഡോ. സുധീർ കിടങ്ങൂർ*	11
5.	**डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर के काव्य में गाँधी दर्शन** *डॉ.पंडित बन्ने डी.लिट.*	12
5.	**ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ ഹിന്ദി ഗവേഷണ പുരസ്കാര സമർപ്പണം 2019**	15
6.	**पद्मश्री से सम्मानित श्रद्धेय कलमकार आचार्य डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर** *डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन*	17
7.	**विश्व साहित्य पुरुष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर और भारतीय संस्कृति की संवाहिका केरल हिन्दी साहित्य अकादमी** *डॉ.विष्णु आर.एस.*	19
8.	**भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक : आचार्य डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर** ***डॉ.रेमी***	21
10.	**हिन्दी के वरदपुत्र - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर** *डॉ.रंजीत रविशैलम*	22
11.	**डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की आत्मकहानी** ***डॉ.श्रीलता विष्णु***	24

सम्पादकीय

हिन्दीतर क्षेत्रों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में संलग्न कम साहित्यकार होते हैं जिनमें प्राकृतिक सुषमा से संपन्न केरल भूमि पर हमें ऐसे वयोवृद्ध हिन्दी सेवी मिले जिन्होंने हिन्दी को स्वाधीनता संग्राम के सशक्त औजार के रूप में स्वीकार किया और महात्मागाँधी की प्रेरणा से हिन्दी सेवा का ऐसा संकल्प किया कि पूरा केरल हिन्दीमय हो गया। अठानब्बे साल में प्रविष्ट वे महापुरुष हैं - पत्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर। डॉ. नायर ने सृजन, इतिहास लेखन, शिक्षण एवं प्रचार के द्वारा हिन्दी को केरल में प्रतिष्ठित किया है। उन्हें हिन्दी जगत केरलीय प्रेमचंद के रूप में जानता है। साहित्यकार के रूप में आज वे हिदगन्दी की मुख्यधारा के रचनाकारों में हैं। केरलीय हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखकर उन्होंने केरल के ज्ञात-अज्ञात रचनाकारों को प्रकाश में लाने का कार्य किया है। लेकिन उनका महत्वपूर्ण योगदान केन्द्रीय एवं प्रातीय सरकारों के हिन्दी साहकार के रूप में रहा है। इसलिए डॉ. नायर की विशिष्ट उपलब्धियों को मानते हुए भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री उपाधि से विभूषित किया। खुशी की इस वेला में आचार्यवर डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का शत-शत वंदन-अभिनन्दन है।

केरल में हिन्दी के भीष्म पितामह के रूप में आज भी वे सक्रीय और समर्पित हैं। हिन्दी के प्रति उनका उत्साह युवकोचित है। वे उभय भाषा साहित्यकार हैं। हिन्दी तथा मलयालम में समानांतर स्तर में साहित्य का सर्जनात्मक कार्य आज भी वे कर रहे हैं। अपने निरंतर सारस्वत यज्ञ के द्वारा आप ककेरल के नहीं, बल्कि भारत के ही श्रेष्ठ साहित्यकार के पद पर प्रतिष्ठा पा सके हैं।

पिछले २४ वर्षों से केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की सुख पत्रिका केरल अकादमी शोध पत्रिका सराकहनीय सेवा करती आ रही है। अकादमी के प्रारम्भ से अब तक जितनी प्रगती प्रगति एवं अभिवृद्धि हुई थी, सब डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी के अश्रांत परिश्रम का नतीजा है। स्थनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर पत्रिका का विशेष आदर है। मुख्यतः शोध पत्रिका भारत की संस्कृति एवं जनजीवन पर आधारित विषयों पर ध्यान देती है।

डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर जी की शताब्दी के इस दशक में अपनी परंपरा का पालन करते हुए केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका हिन्दी की इस चिरयुवा समर्पित साहित्यकार के समग्र व्यक्तित्व और कृतित्व का मूल्यांकन प्रतुतकर उनके प्रति श्रद्धासुमन समर्पित करते हुए गौरवान्वित अनुभव करती है। हमारी कामना है कि वे कई वर्षों तक स्वस्थ व सानंद रहकर हमारे बीच प्रकाश पुंज के रूप में प्रेरणा देते रहें। पद्मश्री उपाधि प्राप्ति के इस अवसर पर शोध पत्रिका उन्हें श्रद्धा सुमन के रूप मेगं यह विशेषांक समर्पित करती है।

डॉ.विष्णु आर.एस.

गुरुवन्दनम

जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर

हमारे प्रिय और आदरणीय चन्द्रशेखरन नायरजी, अपने पञ्चालबे साल की आयू में ही सही पद्मश्री से सम्मानित किये गये, जिससे हमें बेहद खुशी हो गये हैं। षेक्सपियर के नाटक हामलेट में जाकवीस द्वारा मनुष्य जीवन के सात चरणों का सरल रूप से वर्णन किया गया हैं।

1. नेरस् के हाथों में सोया हुआ छोटा सा नव जात शिशु
2. कँधों में किताबों का बस्ता लिये अनमना मन से स्कूल जाता बालक
3. किसी की परवाह किये बिना किशोर अवस्था में प्रेमी
4. संसार को अपने अधीन कर लेने के लक्ष्य से अहँकारी जवान युवा जो सबसे लडता रहता है
5. मध्यावस्था में मिली परिपक्वता
6. पुराने पेन्ट के फिट न होनेपर अपना गरभनाल और चशमा लिये घूमता फिरता बूढा आदमी
7. बच्चों की तरह बिना दाँतों के, बिना देख सकता, बिना सुन सकता, बिना स्वाद से खा सकता, बूढापन

हम में से कोई भी ऐसा नहीं होगा जो इन सातों चरणों से छुटकारा पा सकें। परंतु मेरे गुरुवर प्रो.चन्द्रशेखरन नायरजी, जो कि अब इस अवस्था में हैं, इन में से कई चरण उनके जीवन से मेल नहीं खाता। हाँ, उनके प्रिय पुत्र और पत्नी के गुजर जाने का दुःख उन्हें ज़रूर होगा।

प्रो.चन्द्रशेखरन नायर जी कभी भी अपने इस बूढापन में भी यह नहीं सोचा कि अब मेरा समय समाप्त हुआ। नहीं सुस्ताते हुऐ सोते रहे। इस अवस्था में भी अपना धैर्य समेटे हुऐ साहित्य और कला के क्षेत्र अपनी जीवन-अभिलाषा के अभिवृद्धि केलिए आगे बढ़ते जा रहे हैं। आपका मैं दिल से अभिनन्दन करता हूँ।

तीन वर्ष पहले अपने पैनशन की रकम से पाँच लाख रुपये, अपने बैंक के निश्चित खाते में जमा किया, उससे मिल रहे वार्षिक ब्याज जो पचास हज़ार रुपये हैं, उसे हर वर्ष नकद पुरस्कार के रूप में सम्मानित कर रहे हैं।

केरल के विश्व विद्यालयों से पिछले साल हिन्दी साहित्य में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त शोधार्थियों में से वर्स श्रेष्ठ शोध-कार्य को यह पुरस्कार सम्मानित किया गया। इसके पहले 2018 और 2019 में सबसे सर्वश्रेष्ठ शोध कार्य किये शोधार्थी को यह पुरस्कार प्रदान किया था। इस वर्ष कोविड-19 की वजह से इसकी कमेटी मीटिगँ न होने के कारण अकादमी के कार्यकारी मँडल यह निर्णय ले लिया है कि इस साल के सर्वश्रेष्ठ शोध कार्य को अगले साल के सर्वश्रेष्ठ शोधकार्य के साथ पुरस्कार सम्मानित किया जायेगा। हिन्दी के प्रचार और प्रसार केलिए प्रोफसर कितने तत्पर है, इसका प्रमाण है यह पुरस्कार। यह जानना ज़रूरी है कि केरल में हिन्दी को बढ़ावा देनेवाली यह सबसे बडी रकम का पुरस्कार है।

विविध भाषाओं में कई पुस्तकें आपने लिखी है। हिन्दी प्रदेशों के साहित्यकारों के बीच आपका स्थान बहुत ऊँचा है। उन सबका स्नेह और आदर आपको मिला है। प्रो.चन्द्रशेखरन नायर जी को देशरत्न कह कर पुकारने वाले भी मलयाली नहीं, बल्कि हिन्दी प्रदेश के वासी है।

साहित्य और चित्रकला में निपुण प्रो.नायरजी कई सर्वश्रेष्ठ पुरस्कारों से विभूषित हैं। यह एक दुःख सत्य है कि पद्मश्री पुरस्कार तो आपको कई साल पहले ही मिल जाना चाहिए था। देर से ही सही, आपको इस पुरस्कार से सम्मानित तो किया गया। दूसरे लोगों के साथ मैं भी अत्याधिक प्रसन्न हूँ।

पिछले कुछ सालों से पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किये जानेवालों को देखकर मुझे ऐसा लगता है कि जब किसी योग्य व्यक्तित्व को यह पुरस्कार मिलता है, तो ही इस पुरस्कार का महत्व एवं आदर होता है। आप जैसे सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व को यह पुरस्कार से सम्मानित किया गया, इससे मैं सन्तुष्ट हूँ।

पद्मश्री से विभूषित भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक एवं हिन्दी सेवी आचार्य डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर

डॉ.तंकमणि अम्मा

वर्ष 2020 का गणतंत्र दिवस केरल के भाषास्नेहियों, हिन्दी प्रेमियों और संस्कृतिकर्मियों केलिए शुभ और सुखद समाचार लेकर अवरित हुआ था। भारत सरकार की ओर से ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में कार्यरत निष्ठावान हस्तियों को पद्म पुरस्कारों की घोषणा की गई तो केरल के डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी का नाम भी उसमें सम्मिलित था। उन्हें पद्मश्री पुरस्कार घोषित हुआ था। इस घोषणा ने केरल हिन्दी साहित्य अकादमी सहित हिन्दी से जुड़े समस्त जन को विशेष आनंदित कर दिया। सत्तानबे साल की आयु में भारत सरकार से घोषित इस पुरस्कार पर नायर जी को अत्यधिक आनंद का अनुभव हुआ। उनके निवास तिरुवनंतपुरम के श्रीनिकेतन में जीवन के विविध क्षेत्रों में उनके सहयोगी रहे मित्रगण, उनके शिष्यगण केरल में कार्यरत हिन्दी संस्थाओं के कार्यकर्ता पहुँच गये और उनका अभिनंदन किया। समाचार पत्रों के संवाददाता आये और उनसे साक्षात्कार लिये दूरदर्शन के तिरुवनंतपुरम केन्द्र तथा अन्य कतिपय चैनलों में भी उनका साक्षात्कार लिया। नायरजी द्वारा संस्थापित केरल हिन्दी साहित्य अकादमी तथा केरल की प्रतिष्ठित हिन्दी संस्था केरल हिन्दी प्रचार सभा के संयुक्त तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम के एम.के.वेलायुधन नायर सभागार में एक भव्य अभिनंदन समारोह का आयोजन हुआ जिसका उद्घाटन तिरुवितांकूर राजपरिवार की अश्वति तिरुनाल गौरी लक्ष्मीबाई तंपुराट्टी जी ने किया था। केरल के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक क्षेत्र के कई दिग्गाजों ने उनको हार्दिक बधाई दी और आशीर्वचन दिया कि केरल के ये प्रतिभाधनी आचार्य जुग-जुग जिएँ।

केरल के लब्ध प्रतिष्ठ सारस्वत साधक डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर ऐसे बहुमुखी प्रतिभावान कलाकार हैं जिनकी सृजनधर्मिता की अंतर्धारा ही भारतीय संस्कृति की उदात्तता की उद्घोषणा रही है। नायरजी सच्चे अर्थ में भारतीय संस्कृति के प्रबल हिमायती हैं। नायर जी के इस संस्कृति-प्रेम ने उन्हें न केवल मातृभाषा मलयालम में साहित्य सृजन की ओर प्रेरित किया है बल्कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी उच्चकोटि का रचनाकार बना दिया है। राष्ट्रभाषा हिन्दी में उनके सृजनकार्य ने उनकी सांस्कृतिक चेतना के दायरे को विस्तृत कर दिया है और उनकी सृजन धर्मिता को एक विशिष्ट सांस्कृतिक आयाम भी प्रदान किया है। भारतीय संस्कृति के उत्कृष्ट पहलुओं ने डॉ.नायर जी को इस भांति प्रभावित कर दिया है कि उनका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही भारतीय अस्मिता से सराबोर हो उठा है।

गुरुवन्दनम...

प्रोफसर चन्द्रशेखरन नायरजी को यह सम्मान दिलाने केलिए जिन लोगों ने इनका नाम प्रस्तुत किया और दूसरे सभी लोग जो इस महान कार्य केलिए कार्यरत रहे, उन्हें मैं अपना आदर प्रकट करता हूँ, स्वस्थ और अर्थपूर्ण रूप से समाज और हिन्दी साहित्य की सेवा, निरन्तर कई साल करते रहने केलिए मैं आपके दीर्घायू केलिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। महात्मा, मेरे गुरू, आपके चरणों में इस शिष्य का नतमस्तक नमस्कार। जय हिन्द।

संरक्षक, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी,
पूर्व न्यायाधीश, उच्च न्यायालय (केरल) एवं
मानद चेयरमेन, केरल सरकार अगाडी
समुदाय कल्याण आयोग

अपनी साहित्यिक सांस्कृतिक लंबी यात्रा के दौरान आपने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। पूरे देश में ही नहीं, विदेशों में भी भारतीय अस्मिता और सांस्कृतिक उच्चादर्श का प्रसार करने के सराहनीय कार्य में संप्रति आप लगे हुए हैं।

डॉ.नायरजी का जन्म 27 जून 1924 को केरल के कोल्लम जिले के शास्तांकोट्टा नामक गांव में हुआ था। उनके पिताश्री के नीलकंठपिल्लै तथा माता श्रीमती के. जानकी अम्मा थी। प्रारंभिक शिक्षा गांव की पाठशाला में हुई। तदुपरांत महात्मागाँधी के राष्ट्रभाषा आंदोलन के प्रभाव में पड़कर उन्होंने हिन्दी सीखने का संकल्प लिया। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। उसके बाद उन्होंने हिन्दी में साहित्यरत्न, बीए. तथा एम.ए. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। बिहार विश्वविद्यालय से हिन्दी और मलयालम के दो प्रतीकी (सिंबोलिक) कवि सुमित्रानंदन पंत और जी. शंकर कुरुप विषय पर शोधकार्य करके पीएच.डी की उपाधि भी प्राप्त की। 1947 से 1950 तक हाईस्कूलों के हिन्दी अध्यापक के रूप में उन्होंने कार्य किया। 1951 से 1984 तक वे एन.एस.एस. के विविध महाविद्यालयों में प्राध्यापक रहे। तिरुवनंतपुरम के महात्मा गाँधी कॉलेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद से 1984 में वे अवकाश प्राप्त कर गये। उसके बाद विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के एमिरिटेस प्रोफेसर भी रहे। एक कुशल अध्यापक रूप में उन्होंने खूब ख्याति आर्जित की।

गाँधीवादी आचार्य और कर्मठ कार्यकर्ता

महात्मा गाँधी के वे सच्चे अनुयायी हैं। गाँधीवाद के सबल समर्थक भी। गाँधीजी के सादा जीवन और उच्च विचार वाले आदर्श को अपने जीवन में अमल में लानेवाले कर्मठ कार्यकर्ता चद्रशेखरन नायर खादी-ब्रती भी हैं। अपने सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा भारतीय एकता को सुदृढ़ रखने के लिए वे सदैव प्रसन्नशील हैं। भारत की भावात्मक एकता को दृष्टिपथ में रखकर उन्होंने केरल हिन्दी साहित्य अकादमी जैसी महत्वपूर्ण संस्था की संस्थापना की है जो हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखकों को प्रेरणा-प्रोत्साहन देती है तथा हिन्दी के उत्कृष्ट साहित्यकारों को सम्मानित और पुरस्कृत भी करती है। अकादमी की ओर से केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका शीर्षक शोध पत्रिका भी प्रकाशित होती है जिसके वे मुख्य संपादक हैं।

चतुर चित्रकारः

डॉ.नायरजी एक चतुर चित्रकार भी हैं। उन्होंने कई जलरंग और तैलचित्र खींचे हैं जिनमें अधिकांश बहुप्रशंसित हुए हैं। प्रकृति और पुरुष, शाश्वत संगीत, केरल माता, तमसो मा ज्योतिर्गमय, सीता-राम, गीतोपदेश भगवान बुद्ध, विवेकानंद, एम.पी.मन्मथन आदि आपके खूब ख्यातिप्राप्त चित्र हैं। डॉ.नायर के चित्रकार व्यक्तित्व में भी उनकी उदात्त लोकमंगल की भावना उभर कर आयी है। भारतीय और पाश्चात्य चित्रकला के वे मर्मज्ञ हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य चित्रकला की बारीकियों और उसके विभिन्न पहलुओं पर उनके कई प्रामाणिक आलेख स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुए हैं।

सांस्कृतिक सेतु-बंधनः

सुदूर दक्षिणी प्रांत केरल में रहकर मातृभाषा मलयालम में ही नहीं, राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी अपनी प्रखर प्रतिभा का प्रसार करनेवाले हैं डॉ.नायर जी। मलयालम और हिन्दी में अथक साहित्य सेवा करके एक ओर वे दक्षिण और उत्तर को जोड़ने का सराहनीय कार्य करते हैं तो दूसरी ओर तुलनात्मक अध्ययनों और अनुवादों के जरिए विभिन्न भारतीय भाषाओं और साहित्यों को परस्पर जोड़ कर भारत को एक सूत्र में बांधने का श्रमसाध्य कार्य भी संपन्न कर रहे हैं। इस प्रकार संस्कृतिक संतुबन्धन की दिशा में डॉ.नायर जी महती भूमिका निभा रहे हैं।

सृजन संसारः

डॉ.नायरजी के सृजन संसार का दायरा बेहद व्यापक हैं, कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, निबन्ध, समीक्षा

आदि सोहित्य की विविध विद्याओं में आपने अपनी सफल लेखनी चलायी है। साहित्येतिहास के प्रणयन तथा शोध के क्षेत्र में भी उन्होंने श्लाघनीय कार्य किए है। अपने व्यक्तित्व में अन्तर्लीन सांस्कृतिक चेतना को खूब प्रस्फुटित होने का मौका इस साहित्य सृजन ने उन्हें प्रदान किया है। डॉ.विजयेन्द्र स्नातक ने ठीक ही लिखा है कि श्री. नायर सच्चे अर्थों में अहिन्दी भाषा के गौरवशाली वकील हैं, जो विवाद नहीं करते, प्रतिद्वद्विता खड़ी नहीं करते, सीधे और सहज ढंग से हिन्दी की गरिमा स्थापित करते हैं। राष्ट्रीय भावात्मका एकता का पथ प्रशस्त करते हैं। भाषाओं की दूरी को मिटाते है, भारतीय सांस्कृतिक एकता को सुदृढ बनाते हैं और दक्षिण तथा उत्तर भारत के बीच सेतु का काम करते हैं।

डॉ.नायर की समस्त कृतियाँ अनेक संस्कृति-प्रेम के निस्तुल्य निदर्शन हैं। हिन्दी और मलयालम में उनके साठों ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं तथा ३५० से ज्यादा रचना स्तरी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई हैं। कई पत्रिकाओं व उत्कृष्ट ग्रंथों के संपादन का कार्य भी उन्होंने किया है।

कविः

कवि के रूप में जॉ.नायर यशस्वी हैं। हिमालय गरज रहा है, उनका खातिप्राप्त खण्डकाव्य है। किसी भी हिन्दीतर भाषी हिन्दी साहित्यकार के द्वारा विरचित यह प्रथम प्रबन्धकृति है। इसमें कवि का उज्ज्वल राष्ट्र प्रेम व सांस्कृतिक प्रेम उजागर हो उठा है। चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि में विरचित वह कृति अपनी ओजपूर्ण भाषाशैली के कारण विशेष आकर्षक बन पड़ी है। चिरंजीवी और अन्य कविताऐं में भी नायरजी की अनूठी कविताएँ संकलित है। 'कविताएं देशभक्ति की' में उनकी 35 कविताएं संकलित हैं। सन् 2005 में प्रकाशित उनका महाकाव्य 'चिरंजीव' बहुचर्चित और बहुप्रशंसित बहुप्रभावित हुआ हैं। भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों की सार्धक अभिव्यक्ति करने में उनकी कविताएँ सर्वथा सक्षम हैं। राष्ट्रीय गीतकार के नाम से वे जाने जाते हैं।

नाटककारः

हिन्दी नाटक क्षेत्र को डॉ.नायर जी की देन अनुपम है। एक विशिष्ट सांस्कृतिक आयाम प्रदान करके आपने हिन्दी नाटकों को अहं भूमिका दी है। द्विवेणी, कुरुक्षेत्र जागता है, युग संगम, सेवाश्रम, देवयानी, धर्म और अधर्म आदि आपके नाटक हिन्दी के सांस्कृतिक नाटक क्षेत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। डॉ.नायर के सांस्कृतिक चिंतन का प्रस्पष्ट रूप इन नाटकों में परिलक्षित होता है। नायरजी की सांस्कृतिक उपलब्धियों को पहचान केलिए उनके नाटकों का सम्यक अनुशीलन नितांत अनिवार्य हो जाता है। डॉ.नायर के नाटकों में परिलक्षित भारतीयता को रेखांकित करते हुए हिन्दी के मूर्धन्य समीक्षक डॉ.नत्थन सिंह ने लिखा है। उनके सामने भारतीय आदर्शों की अभिव्यंजना का प्रश्न प्रमुख है, भारतीयता की रक्षा की भावना अधिक प्रिय है और साहित्य के माध्यम से लोक-मंगल-पोषक समर्थक एवं सफल मानव की प्रतिष्ठा का विचार अधिक प्रधान है... ड़ॉ.नायर के अन्तस में भारतीय संस्कृति की गंगा प्रवाहित होती है। वे भारतीय पहले हैं और अन्य कुछ वाद में।

कहानीकारः

हार की जीत, प्रोफसर और रसोइया आदि डॉ.नायरजी के विशिष्ट कहानी संग्रह हैं। इन संग्रहों की अधिकांश कहानियों के कथ्य का सीधा सरोकार भी भारतीय सांस्कृति तथा मानवीय उच्च आदर्शों की प्रतिष्ठापना से है।

निबन्ध एवं समीक्षाः

अपने निबन्ध संकलनों और समीक्षा ग्रंथों (जिनकी सूची काकी बड़ी है) में भी भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों की महिमा का गायन यत्र-तत्र-सर्वत्र हुआ है। भारतीय

साहित्य, भारतीय साहित्य और कलाएँ जैसे शीर्षक ही इस तथ्य के प्रस्पष्ट-प्रमाण प्रस्तुत करनेवाले हैं।

शोधः

डॉ.नायरजी का बहुचर्चित शोध प्रबन्ध हिन्दी और मलयालम के दो सिंबोलिक (प्रतीकावादी) कवि उत्तर और दक्षिण के दो महान कवियों की कविताओं के साम्य-वेषम्य के रेखांकन के साथ-साथ वैविध्य में एकत्व को संजोनेवाली भारतीय संस्कृति की अस्मिता का उद्घोषक भी है। कविवर पंत जी का यह कथन सार्थक है कि - "वस्तुतः एक दक्षिणात्य विद्वान के द्वारा यह ग्रंथ हिन्दी साहित्य केलिए ही नहीं, अपितु समस्त भारतीय साहित्य केलिए एक विशिष्ट देन है।"

जीवनीः

महात्मा गाँधी, महर्षि विद्याधिराज जैसे जीवनी ग्रंथों के मूल में भी लेखक का संस्कृति - प्रेम ही कार्य करता दिखायी देता है। चित्रकला साम्राट राजा रविवर्मा शीर्षक ग्रंथ डॉ.नायर की अनूठी उपलब्धि है।

आत्मकथाः

अनंतपुरियुं ञानुं (अनंतपुरी और मैं) शीर्षक से डॉ.नायरने मलयालम में आत्मकथा की रचना की है जिसका अनुवाद हिन्दी में एक कर्मयोगी की आत्मकथाः भारतीय स्वतंत्रता के रास्ते में शीर्षक से श्रीमती कौसल्या अम्माल ने किया है। वस्तुतः डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की सृजनधार्मिता की अन्तः सलिला के रूप में प्रवहमान भारतीय सांस्कृति की उदात चेतना नायर जी की रचनाधार्मिता को एक नूतन आयाम देने में सर्वथा सक्षम निकली है तथा नायर जी के साहित्य को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत एवं सम्मानित करने में भी समर्थ रही है। राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय कई पुरस्कार उनकी खोज में आए हैं। कई मानद उपाधियों से भी वे विभूषित हुए हैं। नायरजी की रचनाधर्मित में परिलक्षित भारतीयता और सांस्कृतिक परिचिंतन इतना चर्चित हुआ है कि उनकी रचनाओं पर शोध कार्य करके डॉ. गोपालजी भटनागर ने रीवा विश्वविद्यालय से पीएच.डी की उपाधि प्राप्त कर ली है। हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ समीक्षक डॉ.नत्थन सिंहजी ने हाल ही में भारतीयता के संरक्षक साहित्यकार : डॉ.एन.चन्द्रशेकर नायर शीर्षक उत्कृष्ट शोध प्रबन्ध रचा है। उस यशस्वी सारस्वत संघर्ष के नाम पर दिल्ली से एक प्रौढ़ अभिनंदन ग्रंथ भी समर्पित हुआ है। समकालीन भारतीय नाट्य साहित्य शीर्षक संदर्भ ग्रंध का समर्पण करके उन के हितैषियों ने उनके प्रति आदर प्रकट किया है। भारत सरकार के कई मंत्रालयों की सलाहकार समितियों के ये सदस्य रहे हैं, तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का एमरिटस प्रोफसर का विशिष्ट पद भी उन्हें प्राप्त हुआ है। उनकी कई रचनाएँ केरल तथा उत्तर भारत के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में संलग्न भी हैं।

सन् 2018 में डॉ.नायर ने केरल में हिन्दी शोध के स्तर को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक शोध पुरस्कार - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर गवेषणा पुरस्कार - की घोषणा की है। इस के तहत 50,000 (पचास हज़ार रुपये) और प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार केरल के किसी भी विश्वविद्यालय से पीएच.डी उपाधिप्रदत्त शोध प्रबन्धों में से सर्वश्रेष्ठ शोध प्रबन्ध को पुरस्कार-निर्णय समिति की संस्तुति के आधार पर प्रदान किया जाता है।

ऐसे सांस्कृति प्रेमी रचनाधर्मी कलाकार को पद्मश्री पुरस्कार मिला है, यह तमाम भाषा साहित्य कला, संस्कृति प्रेमियों केलिए आह्लादकारी बात है। यही कामना है कि ऐसे प्रतिभा-धनी कर्मठ कलाकार स्वस्थ, सानंद और दीर्घायु रहें और भावी पीढ़ी का पथ-प्रदर्शन करें। अपने संपूज्य गुरुवर का शत शत वंदन! अभिनंदन!!

पूर्व प्रोफ. एवं डीन,
केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम।

ഡോ. ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ 97ന്റെ നിറവിൽ

ഡോ. സുധീർ കിടങ്ങൂർ
(മുൻ പ്രിൻസിപ്പാൾ, മഹാത്മാഗാന്ധി കോളെജ്)

ദേശീയതയും മഹാത്മാഗാന്ധിയുമാണ് ഡോ.എൻ. ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ എന്ന സാഹിത്യോപാസകനെ ഹിന്ദിഭാഷയിലേക്കും സാഹിത്യത്തിലേക്കും ആകർഷിച്ചത്. കവിത, ചെറുകഥ, നോവൽ, നാടകം, ജീവചരിത്രം, നിരൂപണം, പഠനം തുടങ്ങിയ എല്ലാ മേഖലകളിലും ഒട്ടനവധി കൃതികൾ രചിച്ചുകൊണ്ട് ഹിന്ദിയുടെ ഹൃദയഭൂമിയിലേക്ക് ഡോ.നായർ നടന്നുകയറുകയായിരുന്നു. സുഖദുഃഖസമ്മിശ്രവും സംഭവബഹുലവുമായ ജീവിതത്തിൽ ഗാന്ധിയൻകർമ്മപദ്ധതികളും ഹിന്ദിഭാഷാപ്രചാരണവും അദ്ദേഹത്തിന് വഴിവിളക്കായി മാറി. അദ്ധ്യാപകജീവിതം അദ്ദേഹത്തെ ആദർശനിഷ്ഠനായ ആശയശില്പിയാക്കി. വ്രതനിഷ്ഠയോടെ ഭാഷാസാഹിത്യരംഗത്ത് ദീർഘമായ കാലയളവിൽ ഇങ്ങനെ കർമ്മതപതിയായിക്കഴിയുന്നവർ അപൂർവ്വമാണ്. തൊണ്ണൂറ്റിഏഴാം വയസ്സിലും വിശ്രമമറിയാത്ത ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ പുതിയ തലമുറയ്ക്ക് വിസ്മയാവഹമായ മാതൃകയായിരിക്കും.

കൊല്ലം ജില്ലയിലെ ശാസ്താംകോട്ടയിൽ 1923 ഡിസംബർ 29-ന് (1099-ാമാണ് ധനുമാസത്തിലെ പൂയംനാളിൽ) കൃഷിക്കാരനായ നീലകണ്ഠപിള്ളയുടെയും ഭക്തപാരായണയായ ജാനകിയമ്മയുടെയും പുത്രനായിട്ടാണ് ചന്ദ്രശേഖരൻനായർ ജനിച്ചത്. വിദ്യാധിരാജചട്ടമ്പിസ്വാമികൾ സമാധിസ്ഥനാകുന്നതിന് ഏതാനും മാസങ്ങൾ മുമ്പ് ജനിച്ച പുത്രനെ അമ്മ ചട്ടമ്പിസ്വാമിഭക്തനായി വളർത്തി. ചന്ദ്രശേഖരൻനായരുടെ ജീവചരിത്രം 'കേരളത്തിന്റെ പ്രേംചന്ദ്' എന്ന ശീർഷകത്തിൽ എഴുതിയ ഡോ. നത്ഥൻസിംഗ് ആ അമ്മയെ ഇങ്ങനെ വിശേഷിപ്പിക്കുന്നു. തുളസീദാസിന് രാമനാമവും സൂർദാസിന് കൃഷ്ണനാമവും ഭവസാഗരം തരണം ചെയ്യാനുള്ള നൗകയായിരുന്നതുപോലെ ജാനകിയമ്മയ്ക്ക് തന്റെ സങ്കടമോചകൻ വിദ്യാധിരാജനായിരുന്നു. 'മഹർഷി വിദ്യാധിരാജതീർത്ഥപാദകർ' എന്ന ഗ്രന്ഥം തന്നെ രചിച്ചുകൊണ്ട് ഡോ.നായർ അമ്മയുടെ ഭക്തിക്ക് പൂരണം നൽകിയത് ഇവിടെ ചേർക്കാം. പിന്നീട് ഹിന്ദിയിലേക്കും ഇംഗ്ലീഷിലേക്കും അദ്ദേഹം ഈ കൃതി വിവർത്തനം ചെയ്തു.

ഗാന്ധിജിയുടെ പ്രഭാവം നിറഞ്ഞുനിന്ന കാലയളവിൽ ബാല്യകൗമാരങ്ങൾ പിന്നിട്ട് ഡോ.നായർ ദേശീയ പ്രസ്ഥാനം, ഖാദിസ സ്വാശ്രയശീലം, അഹിംസ, ഗ്രാമസ്വരാജ്, ഹിന്ദിഭാഷാപഠനം തുടങ്ങിയ വയുടെ പ്രചാരകനായി ഗ്രാമഗ്രാമാന്തരങ്ങളിൽ സഞ്ചരിക്കുകയും കവിതകളും കഥകളും രചിക്കുകയും പ്രഭാഷണങ്ങൾ നടത്തുകയും ചെയ്തുപോന്നു. ആത്മീയതയും ദാർശനീകതയും അദ്ദേഹത്തിന്റെ ജീവിതചര്യകളെ സ്വാധീനിച്ചു. സ്വാമിവിവേകാനന്ദനും ഋഷികവി രവീന്ദ്രനാഥടാഗോറും ശ്രീ അരബിന്ദോയും ആചാര്യവിനോബാഭാവേയുമൊക്കെ ഡോ.നായരുടെ ആദർശപുരുഷന്മാരായി. പുരാണേതിഹാസങ്ങളുടെ അമൃതമഥനത്തിലൂടെ ലഭിച്ച ജ്ഞാനാമൃതം ഡോ. നായരെ അദ്ധ്യാപകന്റെയും എഴുത്തുകാരന്റെയും കർമ്മമേഖലകളെ ചൈതന്യനിർഭരമാക്കി. ചിത്രങ്ങൾ വരയും ശില്പങ്ങൾ നിർമ്മിച്ചും ശുദ്ധസംഗീതം ആസ്വദിച്ചും അദ്ദേഹം വൈവിധ്യമാർന്ന തന്റെ ആത്മഭാവങ്ങൾക്കും സിദ്ധിവൈഭവങ്ങൾക്കും സാക്ഷാത്കാരം തേടി.

മഹാകവി വള്ളത്തോൾ ഭാസകാളിദാസാദ്യന്മാരെയും പുലർത്തിയ ഭാസുരസാരസ്വതഭണ്ഡാരപ്പുരകളായാണ് പുരാണങ്ങളെ വിശേഷിപ്പിച്ചത്. ഭാസനും കാളിദാസനും മാത്രമല്ല, ടാഗോറും ബങ്കിംചന്ദ്രനും അരബിന്ദോയും വിവേകാനന്ദനുമൊക്കെ പുരാണങ്ങളുടെ പുനരാവിഷ്കാരത്തിലൂടെ നൂതനഭാരതത്തെ മൂല്യവത്തായി വാർത്തെടുക്കാൻ നടത്തിയ യജ്ഞങ്ങളെ അനുസ്മരിപ്പിക്കുന്നതായിരുന്നു ഡോ.ചന്ദ്രശേഖരൻനായരുടെ സാഹിതീയത്നങ്ങളും 'സീതമ്മ' എന്ന നോവൽ മുതൽ 'ദേവയാനി' തുടങ്ങിയ നാടകങ്ങൾ, കവിതകൾ, ചെറുകഥകൾ - ഇവയൊക്കെയും പുരാണങ്ങളുടെ സ്വർണ്ണഖനികളിൽ നിന്ന് സർഗ്ഗാത്മകതയുടെ ശില്പങ്ങൾ വാർത്തെടുത്ത യജ്ഞങ്ങൾ തന്നെയാണ്. ജീവിതസമസ്യകൾക്കുള്ള ഉത്തരം തേടിക്കൊണ്ട് വേദോപനിഷത്തുകളുടെയും മഹാരഥന്മാരുടെയും ജീവിതരഥ്യകളുടെയും സ്തോത്രകൃതികളുടെയുമൊക്കെ അന്തരീക്ഷത്തിലേക്ക് ഡോ.നായർ കടന്നുചെന്നു. ധ്യാനവും യോഗയും പ്രാർത്ഥനയും അദ്ദേഹം ജീവിതത്തിന്റെ ഭാഗമാക്കി. എന്റെ ജീവിതമാണ് എന്റെ സന്ദേശം എന്ന മഹാത്മജിയുടെ അഭിപ്രായം നാം ഓർത്തുപോകുന്നു. രാഷ്ട്രം ദേശർതന

डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर के काव्य में गाँधी दर्शन

डॉ.पंडित बन्ने डी.लिट.

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर जी का मूल दृष्टिकोण राष्ट्रीय विचार धारा एनं गांधीवादी से ओत-प्रोत है। 'हिमालय गरज रहा है' में जो क्षोभ और आक्रोश है वह किसी राष्ट्रवादी के हृदय पर हुए आघात की ही अभिव्यक्ति है। वास्तव में हिमालय गरज रहा है आक्रामक के प्रति भारत की आतमा के आक्रोश का एक जीवंत स्मारक है। ..... यह हिमालय वंदन उसकी विराट राष्ट्रीय चेतना का स्मारक है। हिमालय के मुख से कवि ने भारत की उदार मानवता वादी परंपराओं को यशोगान कराया है। इस देश में वीरों की कभी नहीं रही, पर यह देश किसी अन्य देश पर आक्रमण करने कभी नहीं गया। आक्रमण और अन्याय का प्रतिरोध करने में भी वह पीछे नहीं रहा जैस-

"मुझे याद है भारत ही एक
जनपद, जिसने सर न झुकाया
डरकर अन्यायी के आगे
सत्य अहिंसा उसका नारा।"

(हिमालय गरज रहा है,- डॉ.नायर, पृ.८३)

देश पर चीन का आक्रमण पर हिमालय गरजकर उसे चुनौती देता है। इस देश में चंन्द्रगुप्त, भीष्म पितामह, राणाप्रताप, शिवाजी, वैलुतम्पी जैसे वीर तुम्हारे आक्रमण को विफल कर देने को प्रस्तुत है। तुम्हें वाल्मीकि, व्यास,

ഡോ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ 97ന്റെ നിറവിൽ....

ഉൾപ്പെടെ നിരവധി ബഹുമതികളാലും പുസ്തകങ്ങളാലും ഡോ.നായരെ ആദരിച്ചു.

എന്താണ് ഡോ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായരുടെ ദർശനം? സ്നേഹവും സാഹോദര്യവും സഹവർത്തിത്വവും ദേശത്തോടുള്ള പ്രതിജ്ഞാബദ്ധതയും സർവ്വചരാചരങ്ങളോടുള്ള സമഭാവനയുമാണ് ആദർശനത്തിന്റെ മുഖമുദ്ര. ആദികവിയായ വാല്മീകിയുടെ രാമായണം തുളസീദാസനും കമ്പനും എഴുത്തച്ഛനുമൊക്കെ എപ്രകാരമാണോ ജീവിതദർശനത്തിന്റെയും സാഹിത്യദർശനത്തിന്റെയും മുഖ്യചാലകശക്തിയായത്, അതോപോലെ ഡോ.നായർക്കും പ്രചോദനമായി. അദ്ദേഹത്തിന്റെ അദ്ധ്യാത്മരാമായണ ഗദ്യപരിഭാഷ ഒരേപോലെ ലളിതവും ഗഹനവുമാണ്. ബാല്യത്തിൽ അമ്മ വായിച്ചുകേൾപ്പിച്ച രാമായണം അദ്ദേഹത്തിന്റെ സാഹിതീയാത്രയിൽ മുഖ്യപാഥേയമായി മാറി. മാതൃത്വമെന്നാൽ മഹത്വം എന്ന പദത്തിന്റെ പര്യായമാണെന്ന് അദ്ദേഹം തിരിച്ചറിഞ്ഞു. ഇക്കാലത്തെയപേക്ഷിച്ച് അക്കാലത്തെ സ്ത്രീകൾക്ക് ലോകജ്ഞാനം പരിമിതമായിരുന്നുവല്ലോ. എന്നാൽ രാമായണവും ഭാഗവതവും സ്തോത്രങ്ങളും പ്രാർത്ഥനാമന്ത്രങ്ങളുമൊക്കെക്കൊണ്ട് പുണ്യനിർഭരമായിരുന്നു ആ അമ്മമാരുടെ പരിമിതജ്ഞാനം. അത്തരമൊരു അമ്മയായിരുന്നു ചന്ദ്രശേഖരൻനായരുടെ അമ്മ. ആ മഹാജ്ഞാനഗംഗയിൽ മുങ്ങിക്കയറിയതിനാലാണ് അറിവിന്റെ ഹിമാലയമേറാൻ അദ്ദേഹത്തിനു കഴിഞ്ഞത്. മാതാവും മാതൃഭൂമിയും മാനവസ്നേഹവുമാണ് ഡോ.നായരുടെ ദർശനഭൂമിക.

സമുദായാചാര്യൻ മന്നത്തുപത്മനാഭന്റെയും പ്രൊഫ.എം.പി.മന്മഥന്റെയും സ്നേഹവാത്സല്യങ്ങൾ ലഭിക്കാനിടയായതും നായർ സർവ്വീസ് സൊസൈറ്റിയുടെ കലാലയങ്ങളിൽ അദ്ധ്യാപകനായി സേവനമനുഷ്ഠിക്കാൻ അവസരം ലഭിച്ചതും ഡോ.നായരുടെ കർമ്മമേഖലകളെ അനുഗ്രഹീതമാക്കി. ഗുരുപരമ്പരയും പ്രചോദനസ്രോതസ്സുകളും കലാപ്രവാഹത്തിൽ മാഞ്ഞു. പ്രിയപത്നിയുടെയും സീമന്തപുത്രന്റെയും വേർപാടുകൾ ജീവിതനൗകയെ ചുഴിയിലകപ്പെടുത്തി. കാറ്റും കോളും ചുഴിയുമൊന്നും തളർത്താതെ മുന്നോട്ടുതന്നെ തുഴയുമ്പോൾ നക്ഷത്രങ്ങൾ വഴികാട്ടുന്നു. ഏതു കൊടുങ്കാറ്റിലും ഉലയാത്ത ദീപനാളം ഹൃദയത്തിലുമുണ്ട്. ആ നാളം തെളിഞ്ഞത് ഭാരത,ത്തിന്റെ സ്വാതന്ത്ര്യപൂർവ്വ നാളുകളിലാണ്, അദമ്യമായ സ്വാതന്ത്ര്യദാഹത്തിന്റെയും ഗാന്ധിജിയുടെയും കാലത്താണ്. നവോത്ഥാനത്തിന്റെ ദീപശിഖാവാഹികളായ വിദ്യാധിരാജ ചട്ടമ്പിസ്വാമികളുടെയും ശ്രീനാരായണഗുരുവിന്റെയും കാലത്താണ്.

ഓർക്കാം, നമുക്ക്; ഒരു മഹാചരിത്രകാലത്തിന്റെ സ്പന്ദനമാണ് ഡോ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ.

വണങ്ങാം നമുക്ക്; ഈ ജ്ഞാനജ്യോതിസ്സിനെ!

സൗപർണിക, ഹൗ.നം.46, ശ്രീനഗർ, പരുത്തിപ്പാറ, മുട്ടട പി.ഒ., തിരുവനന്തപുരം-25

कालिदास, शंकराचार्य, तुलसी, कम्बर, रवींद्र के इस देश पर आक्रमण करने पर लज्जित होना चाहिए।

"पावन विश्व महाकवियों का
यह जन्मदेश है, युग जिनका
भक्तिभाव से प्रणमन करता
रुको, झुका दो अपना माथा।"

डॉ. नायर जी के साहित्य में मानवतावाद या विश्वबंधुत्व भावना है अहिंसा और शांति मानवता के रक्षा कवच हैं कई बार परिस्थिति ऐसी विषय उपजाती है। जब संग्राम ही हमारा आवद धर्म बन जाता है। भारतीय वीर युद्ध का वरण तो करता है परंतु संहार केलिए नहीं अपितु मानवता की रक्षा केलिए वीरों में मानवतावाद की भावना है। यही दृष्टिकोण इनके काव्य चित्रण हुआ है। कवि लिखते हैं-

"फिर भी सोचना है सौ बार
तभी को संग्राम विवश हो
रक्षित रहे मानवता, सहज
सत्वों का आधार सबल हो।"

(हिमालय गरज रहा है, - डॉ.नायर, पृ.९२-९३)

मानव को मानव के रूप में प्रतिष्ठित करना ही मानवता है। मानवता की जो धारा महात्मा गांधी जी अजस्त्र धारा डॉ.नायर जी के साहित्य में प्रवाहित है। कवि बार-बार अहिंसामूलक वैचारिकता का गायन करता है। कवि कहते हैं-

गाँधी जी ने प्राचीन संस्कृति के मानववादी सिद्धांतों को गहन कर मानव के विकास में उनका सदैव प्रयोग किया है। मानवता के सच्चे पुजारी मात्र गांधी रहे हैं। संपूर्ण विश्व की महान विभूतियों का स्मरण किया और मानवदावादी विश्वबंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत है। कवि कहते हैं-

"त्याग का, विश्व बंधुत्व का
यही नारा हमारा बुंलद रहे
सचमुच यहीं युग नारा रहे।"

(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.५६)

आदर्शविहीन समाज के उन्मूलन की भावना कवि के मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतीक है। मानवतावादी दृष्टिकोण मनुष्य का सबसे आदर्श है। आज से सत्ता-लोलुप मानवीय चेतना पर प्रहार करता है। डॉ.नायर जी कहते हैं-

"विडंबना है, यह सत्ताधारी नीति
धिक है यह अभिशप्त मनःस्थिति
हाँ, धन संपति का सदुपयोग
आज भी सुअवसर है अनेक
रोकता है देश वर्ष का कालुष्य
भूखों मरना क्या धरती का नियम है?
देखते रह जाना है सज्जनता।"

(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.५२)

डॉ. नायर जी परंपरागत भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों में गहन आस्था रखते हैं तथा उनका विश्वास है कि हमारे सांस्कृतिक उच्चादर्श चिरपुराण होने पर भी चिरनवीन है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में मनुष्य भैतिक समृद्धि है। आत्मिक शांति और मानसिक स्थैर्य के लिए प्राचीन मानवीय आदर्श ही उपयोगी है। बापू और नेहरू का अभिनंदन कवि बड़ी भावुकता से करता है-

"हम धन्य है, हमारी जननी
मातृभूमि धन्य है कि हमने
अपनी ही आँखों
मानव के ही रूप तुम्हें देखा है।"

कवि नायर की राष्ट्रीय भावना विश्व के सपूतों को श्रद्धांजलि समर्पित करती है और उनके गौरव से अपने को भी गौरवान्वित समझती है। उन्होंने वीर पुरुषों, महात्माओं का स्मरण किया है। कवि की दृष्टि में ये भारतीय किसान सुकृती है। ये कृषक माता के सच्चे सपूत है, वीर संरक्षक है तथा मां को स्वयं समर्पित है। ये अमृत पुत्र है। कवि नायर की समत्व भावना परिलक्षित होता है। उसकी राष्ट्रीय भावना मानवतावाद की सुदृढ़ भिति पर अवस्थित है। दानवराज बलि के त्याग, दानशीलता, सतय चाहे देव हो दानव गुणी होना आवश्यक है। जन्म से दानव होते हुए भी बली गुण से देवत्व के अमरासन पर प्रतिष्ठित है। जैसे-

"किया प्रतिरोध घोर प्रकृति ने,
हुए विच्छिन्न सभ्यता के सपने,
डुबा दिया कोमलता को संसार ने

फटा दिल सज्जनता का,
आरंभ हुआ अराजकता का
लोप हुआ अस्तिकता का,
नृत्य चला विभीषिका का।"

डॉ. नायर जी की विश्वबंधुत्व भावना एवं मानवता वादी दृष्टि काव्य में ही नहीं अपितु उनके समग्र समन्वयवादी प्रवृत्ति ही भारतीय संस्कृतिक चेतना भारतीयता है। अहिंसा भावना का प्रसार और मानवीय आदर्शों की रक्षा भारतीयता के दो तत्व है। भौतिकवादी आज के मानव का गर्व है कि वह एक क्षण में संसार का संहार कर सकता है। कवि ने हिमालय के स्वर में जनमानस तक पहुँता है। नायर जी कहते हैं-

"अब तो उसकी यही चुनौती
में दुनियाँ का नाश करूँगा
दुर्विनीता बंद कर मुँह सक्या-
दुनियाँ का? निजनाश करेगा।"

(हिमालय गरज रहा है - नायर, पृ.८०)

जनजीवन को सुरक्षित एवं सुखी बनाने की लालसा भारतीयता का प्रतीक है। देवत्व की साधना पथ पर आसीन व्यक्ति की सराहना भारतीय आदर्शों का निर्वाह है। डॉ.नायर कहते हैं-

"विष पीकर सुकरात बन गये
अमर, क्रश पर चढ़ ईसा भी
स्वार्थी बन उनको जदिन्होंने
मारा, क्या पाया जीवन में?
स्वार्थवश अगर बुद्ध देव ने
त्यागा होता तब कुछ अपना
सम्राटों से भी क्या पूजित
बनते औ न पलायन मार्गी।"

(हिमालय गरज रहा है - डॉ.नायर, पृ.८२)

डॉ.नायर जी ने ढोंग, अनाचार, आडंबर, संहार और लोक के शोषण का विरोध करते हैं। वैदिक कालीन संस्कृति का दिव्य स्वरूप है इसी में भारतीयता निहित है।

"शुभे रत्न गर्भे
समस्त जग की
मंगल कामना में
सदैव आशा विश्वास किए
निर्व्दन्व्द-निर्वेर तुम विराजती हो
वसुधा को अपना परिवार मान।"

(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.४५)

आज आगे की नई पीढी उसे अपने कुकर्मों से शैंद रही है और इसी से हमारी चिर पुरातन संस्कृति का हनन हो रहा है। नायर जी देश की इस विषय परिस्थिति से पीड़ित है और वह मनुष्य को अपने साहित्य द्वारा शिक्षा देने को आशावादी है। अपना महान देश का भविष्य सुधारें। नई पीढ़ी को आशावादी एवं ससही रास्ते दिखाने का काम डॉ.नायर जी करते हैं। कवि कहते हैं-

"नव युवकों को सही मार्ग दिखाऊँ
कुत्सित फैशनस से उन्हें बचाऊँ
सत्य-अहिंसा के ताने बाने में
छात्रों का जीवन बुन डालूँ मैं
चलने लगे निष्ठा क्रम-क्रम
बहुआयाती मी उमंग भई कार्यक्रम।"

(कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.नायर, पृ.७५)

कवि डॉ. नायर जी पर गांधीवाद का प्रभाव है। वे गांधी जी का गुणगादन करते हैं। कवि शांतिदूत गांधी जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए लिखते हैं-

"सचमुच गांधी जी युग नायक
रहे थे स्वयं विश्व नागरिक
इस सच्चे सत्यान्वेषी का
वसुधा ही घर रहेगी सदा।"

(हिमालय गरज रहा है - डॉ. नायर, पृ.८४)

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि डॉ.नायर जी गांधीवादी साहित्यकार है। उनके साहित्य में समाजहित, लोककल्याण की भावना, राष्ट्रीय चेतना एवं भारतीयता की धारा सदैव बहती रहती है। देशभक्ति एवं राष्ट्रीय भावना के कारण हिन्दी काव्य विकास के पथ पर एक अनमोल रत्न है। डॉ.नायर जी का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संस्कृति है। देश प्रेम उनकी कविता का प्राण है।

शोधनिर्देशक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल) तह-करमाला, जि.सोलापुर (महाराष्ट्र)

ഡോ. എൻ. ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ ഹിന്ദി ഗവേഷണ പുരസ്കാര സമർപ്പണം 2019

കേരള ഹിന്ദി സാഹിത്യ അക്കാദമിയുടെ 39-ാമത് വാർഷികാഘോഷവും ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ ഹിന്ദി ഗവേഷണ പുരസ്കാര സമർപ്പണവും തിരുവനന്തപുരം മന്നം മെമ്മോറിയൽ ഹാളിൽ വച്ചു നടന്നു. പ്രസ്തുത ചടങ്ങ് ശ്രീമതി അശ്വതി തിരുനാൾ ഗൗരി ലക്ഷ്മീഭായ് തമ്പുരാട്ടി ഉദ്ഘാടനം ചെയ്തു. ഡോ.കെ.ജയകുമാർ ഐ.എ.എസ്. മുഖ്യപ്രഭാഷണം നടത്തുകയും ഡോ.സുനന്ദ എസ്. റിപ്പോർട്ട് അവതരിപ്പിക്കുകയും ചെയ്തു.

കേരള സംസ്ഥാന മുന്നോക്ക സമുദായ കമ്മീഷൻ ജസ്റ്റിസ് എം.ആർ.ഹരിഹരൻ നായർ അദ്ധ്യക്ഷനായ ചടങ്ങിൽ മികച്ച ഹിന്ദി ഗവേഷണ പ്രബന്ധത്തിനുള്ള 50,000 രൂപയും സ്തുതിഫലകവുമടങ്ങുന്ന ഡോ. എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ ഹിന്ദി ഗവേഷണ പുരസ്കാരം അങ്കമാലി മഹാകവി ജി.മെമ്മോറിയൽ എച്ച്.എസ്.എസിലെ ഹിന്ദി അധ്യാപിക ഡോ.റമി എ.എം.ന് ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ സമ്മാനിച്ചു. കേരളത്തിൽ ഹിന്ദി സാഹിത്യത്തിന്റെ ഉന്നമനത്തിനുവേണ്ടിയാണ് ഡോ.നായർ ഈ അവാർഡ് ഏർപ്പെടുത്തിയിട്ടുള്ളത്. ഇത് വർഷംതോറും കൊടുക്കുന്ന കേരളത്തിലെ ഹിന്ദി ഗവേഷണ പുരസ്കാരമാണ്. ഇത് രണ്ടാമത്തെ വർഷമാണ് നൽകുന്നത്.

ഡോ.പണ്ഡിറ്റ് ബന്നേയ്ക്ക് ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ ഹിന്ദി സാഹിത്യ പുരസ്കാരം സമ്മാനിച്ചു. 10,000 രൂപയും സ്തുതിഫലകവുമടങ്ങുന്നതാണ് പുരസ്കാരം. ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ നൽകുന്ന ചട്ടമ്പിസ്വാമി പുരസ്കാരം ഡോ.അപർണാ സുധീറിന് സമ്മാനിച്ചു. 5000 രൂപയും സ്തുതിഫലകവുമാണ് സമ്മാനം.

ചടങ്ങിൽവച്ച് 97-ാം പിറന്നാൾ ആഘോഷിക്കുന്ന ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായരെ പ്രമുഖ വ്യക്തികൾ പൊന്നാടയണിയിച്ച് ആദരിച്ചു. പ്രൊഫ.ഡോ.എസ്.തങ്കമണിഅമ്മ, ജസ്റ്റിസ് എം.ആർ.ഹരിഹരൻ നായർ, ശ്രീ.കെ.രാമൻപിള്ള, അഡ്വ.കെ.അയ്യപ്പൻപിള്ള, ഡോ.സുധീർ കിടങ്ങൂർ, ഡോ.പണ്ഡിറ്റ് ബന്നേ, ഡോ.ടി.പി.ശങ്കരൻകുട്ടി നായർ, ഡോ.റമി എ.എം., ശ്രീ.സി.വി.ഗോപിനാഥൻ നായർ, ശ്രീമതി ആർ.രാജപുഷ്പം, ശ്രീ.രഘു ആർ., ഡോ.അപർണാ സുധീർ, ഡോ.വിഷ്ണു ആർ.എസ്. എന്നിവർ ആശംസകൾ അർപ്പിച്ചു.

केरल हिन्दी
साहित्य अकादमी

केरल हिन्दी

केरल हिन्दी

पद्मश्री से सम्मानित श्रद्धेय कलमकार आचार्य डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

डॉ.एम.एस.विनयचन्द्रन

हिन्दी- मलयाळम भाषा एवं साहित्य के यशस्वी शब्द-शिल्पी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर पद्मश्री से सम्मानित हुए हैं। भारत सरकार की ओर से इस साल उद्घोषित पुरस्कर्ताओं में डॉ.नायरजी सबसे बुजुर्ग-वयोवृद्ध साहित्यकार हैं। सरकार की घोषणा की खबर सुनते ही समस्त केरल के हिन्दी प्रेमी-सेवी-जन एवं सहृदय मिज्ञमंडली सहज गौरवान्वित हुए होंगे। सतानबें बरस पार कर चुके आचार्यवर डॉ.नायर साहब के तमाम सृजनकार्य की अन्तर्धारा भारतीय संस्कृति की उदात्तता की उद्घोषणा रही है। महात्मा गाँधी और खादी के अप्रतिम भक्त हैं ये वरिष्ठ सारस्वत साधक। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों भारतीय अस्मिता से खूब तरबतर हैं। धन्य है उनका जीवन! सफल है उनकी जीवन-यात्रा।

आपने अपनी दीर्घकालीन साहित्यिक-सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक यात्रा के दौरान कई महत्वपूर्ण उपल्भियाँ प्राप्त की हैं। सार्वजनिक संगोष्ठियों में और वयक्तिगत मिलाप में डॉ.नायरजी अफ्सर कहा करते हैं - सृजनकार्य मेरे लिए दैविक वरदान है। परम शक्ति की प्रेरणा है। गुरुजनों का प्रसाद है।

मलयाळम के नामी पत्रकार एवं संवाददाता श्री. शंकर हिमगिरी को डॉ.नायरजी के द्वारा दिये गये साक्षात्कार का छोटा-सा अंश (जीवन-दर्शन संबंधी) अनूदित करके मैं यहां उद्ध्वत करूँ - ईश्वर सत्य है। अज्ञेय एवं अनादि (अप्रवचनीय) ईश्वरेच्छा का अद्भुत परिणाम है मेरे जीवन की उपल्ब्धियाँ। मेरा जीवन ईश्वर को समर्पित है। इसीलिए मेरे सिर पर कोई बोझ नहीं है। सत्य के सहयात्री रह जाने के कारण मुझ रास्ते में कोई डर भी नहीं। मेरा जन्म-भार देवी के श्रीचरणों पर भरपूर समर्पित है। धागे में उडते पतंग समान है जीवन। ईश्वरेच्छा के वायु-प्रवाह में इस पार उस पार; ऊपर-नीचे उड़ता रहा। नियमित स्कूली शिक्षा सातवीं कक्षा तक मात्र प्राप्त हुई थी. मगर अब मैं एमरिट्स प्रोफ़सर भी बन गया। साठ से अधिक पुस्तकों का रचयिता हो गया। ये सब कैसे? हाँ, ईश्वर (परम कूरुणिक) की इच्छा की विस्मयपूर्वक सफलता और क्या? मैं विनीत दास हूँ। अनुमान करना पड़ता है कि ईश्वरेच्छा बलीयसी (God's will be done) वाली कहावत डॉ.नायरजी के जीवन में चरितार्थ प्रमाणित होती है।

एक कर्मयोगी की आत्मकथा डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की जीवनी है। निरंतर प्रयत्न से ही विजय तक पहुँच सकता है। विपन्न दशा में रुकी शिक्षागति को आत्मबल और कठोर प्रयत्न से पीएच.डी की उपाधि तक पहुँचाया; संस्कृति एवं साहित्य की दुनिया में बहुचर्चित और बहुसम्मानित हुए। इनके अनोखे व्यक्तित्व और कृतित्व को जानना प्रेरणादायक है ही। डॉ.नायर की आत्मकथा का मलयाळम संस्करण अनन्तपुरियुम ज्ञानुम (Ananthapuriyum Jnanum) शीर्षक से 2008 में प्रकाशित हुआ है।

डॉ.नायरजी का जन्म जून 27, 1924 को केरल के शास्तांकोट्टा गाँव में हुआ था। महात्मा गाँधी के प्रभाव में हिन्दी पढ़ने का संकल्प लिया। हिन्दी प्रचारक श्री.के.राघवन के प्रशिक्षण में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की प्रारंभ परिक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। बाद में स्वयं अपने अध्यवसाय से विशारद, विद्वान, बी.ए., साहित्यरत्न (प्रयाग), एम.ए. (काशी विश्वविद्यालय) आदि उपादियाँ प्राप्त कर लीं। हिन्दी और मलयाळम के दो सिम्बोलिक कवि-प्रतीकी कवि सुमित्रानन्दन पंत और जी.शंकरकुरुप - शोध विषय पर बिहार विश्वविद्यालय से पीएच.डी हासिल की। अपने लंबे अरसे के सार्थक अध्यापकीय जीवन में डॉ.नायर जी को अतिशय सफलता प्राप्त

हुई है। सन् 1945-1951 तक विविध हाईस्कूलों में अध्यापक के पद पर उन्होंने काम किया। फिर एन.एस.एस. के विविध कॉलेजों में (पंतळम, चङ्ङनाश्शेरी, ओट्टाप्पालम, मट्टन्नूर, तिरुवनन्तपुरम) प्राध्यापक, प्रोफेसर के रूप में सराहनीय कार्य किया है। महात्मागाँधी कॉलेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के पद से (1975-1984) आप सेवानिवृत्त हुए।

आप कुशल एवं कर्मठ संचालक हैं। गाँधी जन्मशताब्दी समिति के अध्यक्ष रहे। भारत सरकार के मंत्रालयों की सलाहकार समितियों (चौदह मंत्रालय) के सदस्य रहे हैं। विश्व-हिन्दी सम्मेलनों में समादृत हुए हैं। पत्रकारित के क्षेत्र में जॉ.नायर स्वयं एक संस्था है। उनके संपादकत्व में निकलती केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका पठनीय-लोकप्रिय-साहित्यिक त्रैमासिक है। उनके व्यक्तित्व का एक और अनूठा नैपुण्य है चित्र-रचना। आपने लोक मंगल भावना से उठोरित कई जलरंग और तेलचित्र खींचे हैं।

डॉ.नायरजी के दिपुल सृजन-संसार को कम शब्दों में यहाँ समेट पाना संभव नहीं। कविता, नाटक, कहानी, निबन्ध, जीवनी-लेखन, शोध-लेखन, अनुवाद आदि बहुआयामी विधाओं में पर्याप्त यश उन्हें प्राप्त है। हिमालय गरज रहा है, चिरंजीव महाकाव्य, कुरुक्षेत्र जागता है, देवयानी, त्रिवेणी, प्रोफसर और रसोइया, हार की जीत, महर्षि विद्याधिराज आदि उनकी बहुचर्चित कृतियाँ हैं। भारत के कई विश्वविद्यालयों को पाठ्यक्रम में उनकी कई किताबें संलग्न हैं। दक्षिण और उत्तर भारत के कई पत्र-पत्रिकाओं के द्वारा डॉ.नायर के साहित्यिक योगदान पर केन्द्रित विशेषांक निकल चुके हैं। डॉ.नायर उच्च कोटि के शोध निर्देशक भी रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में केरल विश्वविद्यालय में छह शोधार्थियों को पीएच.डी की उपाधि प्राप्त है। केरल के बाहर से चार शोधार्थी विद्वान डॉ.चन्द्रशेखरन नायर की साहित्यिक देन विषय पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से शोध-उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

भारत की भावात्मक एकता को दृष्टिपथ में रखकर ही डॉ.नायर ने केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की स्थापक की थी। 2019 दिसंबर 18 को अकादमी का ३९वाँ वार्षिक सम्मेलन तिरुवनन्तपुरम राजधानी शहर में स्थित मन्नम मेम्मोरियल सभागार में संपन्न हुआ। 97 बरस के वरिष्ठ आचार्य के गुरवन्दन का भव्य-कार्यक्रम भी चला। डॉ.नायर जी के द्वारा प्रायोजित हिन्दी गवेषण पुरस्कार स(द्वितीय) - पचास हज़ार रुपये स्मृति-चिह्न सहित डॉ.रमी.ए.एम. को उसी दिन दिया गया। उस भव्य समारोह में भाग लेने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ था।

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) और संग्रथन से डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर का आत्म-संबंध है। पंतळम एन.एस.एस. कॉलेज के हिन्दी विभाग में प्रो.पी.जी.वासुदेव के सहयात्री होने के कारण दोनों आचार्यों में आपसी ममत्व गहरा था। तीस-चालीस साल की घनी मित्रता दोनों में रही। जब उत्तर प्रदेश सरकार से पी.जी. वासुदेव पुरस्कृत हुए उसी दंदर्भ में निकले संग्रथन पत्रिका के अंक में संपादकीय लिखने का दायित्व डॉ.नायरजी को सौंपा गया था। डॉ.नायर के अग्रलेख की चार-पाँच पंक्तियाँ उद्धृत करना समीचीन होगा - श्री वासुदेव हिन्दी के सच्चे हितैषी और उसके सेवाव्रती प्रचारक हैं। ...हिन्दीतर प्रदेशों के हिन्दी साहित्यकारों को सम्मानित तथा पुरस्कृत करने का कार्य देशीय एकता की स्वस्थ-मनस्थिति का परिचायक है। देश की भावात्मक एकता को सशक्त बनाने का वह भव्य यज्ञ है। ....साहित्य और संस्कृति के बल पर देश को सूत्रबन्ध बनाये रखनेवाले साहित्यनायकों को प्रोत्साहित करने का दायित्व सरकार का धर्म है। भविष्यदर्शी संपादक एवं भारतीयता के संरक्षक साहित्यकार डॉ.एन.चन्द्रशेखर नायर की प्रार्थनाभरित उद्घोषणा अब उनके ही अपने जीवन में साकार हो उठी है। स्वर्गीय पी.जी.वासुदेव की आत्मा जॉरूर हर्षित होती होगी।

संग्रथन परिवार का हार्दिक अभिनन्दन!! सादर प्रणाम। •

विश्व साहित्य पुरुष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर और भारतीय संस्कृति की संवाहिका केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

डॉ.विष्णु आर.एस.

संसार में कुछ कर्मठ महापुरुष ऐसे होते हैं जो अपनी प्रतिभा और अध्यवसाय के बल पर महान लक्ष्य की प्राप्ति में अग्रसर होते हैं। अपने अंदर के आलोक से आलोकित ये चारों ओर प्रकाश फैलाते है और भविष्य की पीढ़ी केलिए मार्गदर्शन करते हैं।

केसर-सुरभित कश्मीर से लेकर सैकत-सेवित कन्याकुमारी तक भरे हुए भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से केरल छोटा है तो भी प्राकृतिक रमणीयता में वह अद्वितीय है। केरल का साहित्य और संस्कृति भी सर्वथा श्लाघनीय है। केरल हिन्दी साहित्य की गहराई में उतरकर नीरीक्षम करनेवाले एक जिज्ञासु को ज्ञात हो जायेगा कि हिन्दी भाषा विकसित साहित्य-संपत्ति से समुज्वल है। आधुनिक भारतीय साहित्य तथा विश्व-साहित्य में जो नए-नए महत्वपूर्ण प्रयोग किये जाते हैं उनका प्रभाव उन मनीषी के साहित्य में विद्यमान हैं, वे हैं विस्व साहित्य पुरुष पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर। खुशी की इस वेला में आचार्यवर डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का शत-शत वंदन-अभिनन्दन करता हूँ।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर परतिभावान कवि, प्रगल्भ नाटककार, उत्तिष्टमति उपन्यासकार, कल्पनाधनी चित्रकार, संभीर गवेषक के रूपों में हिन्दी प्रेमियों के बीच विख्यात हैं। साहित्य के प्रायः सभी क्षेत्रों में आपका लेखन अखिल भारतीय स्तर का है। डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में कथा के क्षेत्र में भावना के आरोह-विरोह तथा नाटक के क्षेत्र में संघर्ष की भूमिका निरूपित करने में आपकी कला महान है। डॉ.नायर उभय साहित्यकार है। वे हिन्दी तथा मलयालम में समनांतर स्तर में साहित्य का सर्जनात्मक कार्य कर रहे हैं। मलयालम और हिन्दी को उनकी लिखी हुई साठ से अधिक रचनाऐं प्राप्त हुई हैं। ये सभी रचनाएँ उच्च स्तर की ही हैं। अपने निरंतर सारस्वत यज्ञ के द्वारा आप केरल के नहीं, बल्कि भारत के ही श्रेष्ठ साहित्यकार के पद पर प्रतिष्ठा पा सके हैं। अहिन्दी प्रदेश के हिन्दी साहित्यकारों के बीच में डॉ.नायर का समादरणीय स्थान है।

हिन्दी भाषा-भाषियों को मलयालम के महान साहित्यकारों एवं रचनाओं के योगदान का समग्र स्वरूप प्राप्त होने केलिए डॉ.नायर की साहित्य सेवा अवश्यमेव पर्याप्त है। वास्तव में डॉ.नायर ने हिन्दी तथा मलयालम साहित्य को अपनी रचनाओं के माध्यम से धन्य बना दिया है। डॉ.नायर इस सांस्कृतिक सेतुबंधन के द्वारा सुदूर उत्तर भारत और दक्षिण भारत को बड़ी निकटता में ला सके हैं। अतः हम भारतीय उनके आभारी हैं। पद्मश्री से विभूषित डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर को हार्दिक अभिनन्दन के मंदार पुष्पों से मैं अभिषिक्त करता हूँ और उनकी विद्वत्ता के सम्मुख नतमस्तक होता हूँ।

केरल जैसे हिन्दीतर प्रान्त में हिन्दी के प्रचाराकर्थ उन्होंने केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की स्थापना की है। सन् 1982 जून 16 में जब इसकी स्थापना तिरुवनंतपुरम में हुई तो लोग विस्मित हुए कि एक अन्यभाषा की संस्था में भाषा संबंधी संपन्नता जब नहीं है, वहाँ एक भाषा की अकादमी कैसे स्थापित हो सकती है। पर आज वही संस्था विश्व में मशहूर संस्था बन गी है।

1982 जून 16 में पंजीकरण होने के दो साल पहले से हिन्दी साहित्य परिषद् के नाम से यह सस्था कार्यरत थी। परिषद का औपचारिक उद्घाचन केरल के मुख्यमंत्री श्री.ई.के. नयनार द्वारा संपन्न था। परिषद ने कई बार हिन्दी और मलयालम के साहित्यक गतिविधियों पर चर्चाऐं की हैं, जिनमें केरल के अनेक मूर्धन्य हिन्दी साहित्यकारों ने भाग लिया था। सकेरल के महाकवि एम.पि.अप्पन

की मलयालम कविताओं का हिन्दी अनुवाद गौरीशंकर नाम से अकादमी प्रकाशित किया। इस ग्रंथ का अनुवाद परिषद के अध्यक्ष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर ने किया और उसका विमोचन नयी दिल्ली में केंद्रीय परिवहन मंत्री श्री.वीरेन्द्र पाटील द्वारा हुआ। यह पुस्तक केंन्द्र सरकार द्वारा पुरस्कृत भी हुई। केरल के प्रख्यात उपन्यासकार एवं ज्ञानपीठ विजेता श्री.एम.टी. वासुदेवन नायर का मलयालम उपन्यास मञ्जु का हिन्दी अनुवाद अकादमी की सदस्या श्रीमती हफसत सिद्दिकी ने तुषार नाम से किया। उसका धूमधाम से विमोचन दिल्ली में आयोजित साहित्यकारों की सभा में केंद्रीय मंत्री श्री सीताराम केसरी ने किया।

बाद में केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का औपचारिक उद्घाटन केरल के मुख्यमंत्री श्री.के.करुणाकरन ने किया था और प्रथम वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय मंत्री श्री.जियाउर रहमान अंसारी ने किया।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी अपने निश्चित उद्देश्यों और कार्यक्रमों की दिशा में बराबर प्रयत्नशील है। कई ग्रंथों का प्रकाशन किया गया है, जिनमें समकालीन भारतीय नाट्यसाहित्य ग्रंथ का विमोचन भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री.पि.वि.नरसिंहरावने तिरुवनंतपुरम में किया था। हम सूरज के बेटे, श्रेष्ठ सिंबॉलिक कवि जी.शंकर कुरुप आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। अकादमी के आयोजन के दूसरे वर्ष से केरल के उदीयमान हिन्दी और मलयालम साहित्यकारों को नकद पुरस्कार देने की योजना बनाई। अभी एक सौ पच्चास से अधिक साहित्यकार पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। धीरे-धीरे उत्तर के प्रख्यात विद्वानों की उपस्थिति, केंन्द्र एवं राज्य सरकार के मंत्रियों, राजदूतों और अन्य विशेषज्ञों की भागीदारी और देशी विद्या विचक्षणों का संपर्क, सर्वभाषा कवि-सम्मेलन, करलोत्तर साहित्य नायकोदं को सम्मान-पुरस्कार प्रदान, देशीय सम्मेलनों आदि में सदैव नए-नए कार्यक्रम होते जा रहे हैं।

अकादमी की मुख पत्रिका केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका सन् 1996 से अकादमी चेयरमैन डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर के मुख्य संपादकत्व में सुचारू रूप में चली आ रही है। यह पत्रिका मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से निकल रही हैं। पिछले चौबीस वर्षों के भीतर अकादमी ने देश के दस से अधिक ग्रंथकार की रचनाएँ प्रकाशित की हैं।

अकादमी के अध्यक्ष देशरत्न डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के सफलपूर्वक एवं अथाह परिश्रम का नतीजा है केरल हिन्दी साहित्य अकादमी। उन्होंने अपना जीवन हिन्दी भाषा और साहित्य केलिए समर्पित किया है। उन्हें दो बार विश्व हिन्दी सम्मान मिले हैं। वे भारत सरकार के चौदह मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समिति में सदस्य बन चुके हैं। हिन्दी साहित्य और सेवा केलिए देश उन्हें देशरत्न सम्मान से असंकृत किया। भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री.शंकरदयाल शर्मा ने यही उपाधि प्रदान की। भारत की अनेक राष्ट्रपतियों के करकमलों से अनेक पुरस्कार उन्हें प्राप्त हैं। नव निकष पत्रिका डॉ.नायर के नाम पर विशेषांक निकाला। आज सात कार्यकारी सदस्यों के सफलतापूर्वक प्रयत्न से केरल हिन्दी साहित्य अकादमी आगे बढ़ रहा है। केरल उच्च न्यायालय के भूतपूर्व जस्टिस एम.आर. हरिहरन नायर अकादमी के संरक्षक रहे हैं। ख्यातिप्राप्त लेखिका एवं केरल विश्व विद्यालय हिन्दी विभाग की भूतपूर्व अध्यक्षा डॉ.एस.तंकमणि अम्मा अकादमी की उपाध्यक्षा हैं।

पिछले 24 सालों से अकादमी की शोध पत्रिका केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के नाम जो सेवा अर्पित की वह बहुमूल्यवान रही थी। अकादमी के प्रारम्भ से अब तक जितनी प्रगति एवं अभिवृत्ति हुई थी, उसका एकदम वर्णन करना असाध्य है। अकादमी आज अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त हो गयी है। स्थानीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर इसका विशेष आदर है। मुख्यतः शोध पत्रिका भारत की जनजीवन पर आधारित विषयों पर ध्यान दिया है। अतः पूरे देश की साहित्यिक मनस्थिति शोध पत्रिका में शामिल है।

डॉ.नायर की दीर्घदर्शिता, संगठन कुशलता ने अकादमी के कार्यकलापों को उच्च स्तर का बनाया है। हर साल वे नयी खोज को लेकर अवतरित होते हैं। अब वे अठानब्बे

भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक : आचार्य डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

डॉ.रेमी

मेहनत को जीत की इक दुआ मिल गई। कुछ ऐसा ही था मेरेलिए डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी गवेषण पुरस्कार 2019। हिन्दी शोधार्थियों को प्रोत्साहित कर हिन्दी भाषा का सर्वांगीण विकास करना ही इस पुरस्कार का मुख्य उद्देश्य है। और मुझे अपने शोध प्रबंध समकालीन हिन्दी उपन्यासों में पारिस्थितिक विमर्श केलिए यह दिया गया। यह पुरस्कार (पच्चास हज़ार रुपए और स्मृति हिह्न) मुझे 18 दिसंबर 2019 में मन्नम मेमोरियल हॉल तिरुवनन्तपुरम में आयोजित केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के 39वाँ वार्षिक सम्मेलन में दिया गया। जब मुझे यह दिया गया तब मैं अपने आपको बहुत खुशनसीब महसूस की क्योंकि यह अनमोल अमानत मुझे साहित्य की विविध विधाओं में अधिकार पूर्वक लेखनी चलानेवाले केरल के वरिष्ठ साहित्यकार, हिन्दी प्रचारक, प्रसारक और बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रोफ. देशरत्न डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी के हाथों से लेने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है वह भी उनके जन्म दिन की शुभ वेला में। साथ ही मुझे यह बताने में अत्यधिक गर्व और प्रसन्नता हो रही है कि मेरे शोध निर्देशक आदरणीय गुरुवर डॉ.एम.एस. विनयचन्द्रन जी हैं और उनके समक्ष यह पुरस्कार पाना मेरेलिए इतनी खुशी की बात थी कि मैं उसे यहाँ शब्दों में उतार नहीं पाऊँगी।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी के अथक परिश्रम एवं इच्छा शक्ति से हुई दो महान उपल्बधियाँ है - देशीय एवं भावात्मक एकता को लक्ष्य में रखकर चलनेवाली केरल हिन्दी साहित्य अकादमी तथा उसकी मुखपत्रिका केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका। यह दोनों उपलब्धियाँ छात्रों में हिन्दी के प्रति रुचि एवं सृजन क्षमता को बढाने में और मौलिक लेखन तथा शोध-परक अध्ययन केलिए प्रेरणा, प्रोत्साहन, मार्ग निर्देशन तथा सहायता देने में अहम भूमिका निभा रही है।

उन्नति का द्वार खोलने केलिए बस एक ही चाबी की ज़रूरत होती है। वह चाबी है कड़ी मेहनत। अपने मन पसंद लक्ष्य तक पहुँचना आसान कार्य नहीं होता। सफलता के रास्ते में बहुत सी बाधाएँ सामने मूँह फैलाए खड़ी मिलती है। यह बाधाएँ हमें रोकने की पूरी कोशिश करती है। जो लोग मन से कमज़ोर होते हैं वह इन परेशानियों के आगे झुक जाते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो इन परेशानियों का सीना तान कर सामना करते हैं। भले ही लक्ष्य तक पहुँचने की रफ्तार में कुछ समय केलिए

विश्व साहित्य पुरुष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर और भारतीय संस्कृति की संवाहिका केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

साल के हो चुके हैं। सन् 2018 में एक नया कार्यक्रम उन्होंने शुरू किया है। केरल के विश्वविद्यालयों से हिन्दी में पीएचडी उपाधि प्राप्त शोध प्रबंधों से सर्वश्रेष्ठ शोध प्रबंध का चयन कर उसे पचास हज़ार (50,000) रूपये का डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी शोध पुरस्कार देने का शुभारम्भ हुआ है। 2018 में सर्वप्रथम यह पुरस्कार एन.एस.एस.हिन्दू कॉलेज, चंगनाशेरी के हिन्दी विभाग की सह आचार्या डॉ.एस.रेणु के उसके शोध प्रबंध पर मिल गया। 2019 में यह पुरस्कार अंकमालि महाकवि जी मेम्मोरियल एच.एस.एस. की अध्यापिका डॉ.रेमी को मिल गया। नयी पीढ़ी के हिन्दी शोधार्थियों को प्रोत्साहित कर हिन्दी भाषा का सर्वांगीण विकास करने की दिशा में यह एक शुरुआत है।

अठानब्बे साल का यह चिर युवा अब भी रचनात्मक कार्यों में पूर्ण रूप से लगा हुआ है। उनकी लेखनी निरंतर चलती रहे, भागवान से यही प्रार्थना है कि ऐसे प्रतिभाधनी, कर्मठ कलाकार स्वस्थ और दीर्घायू रहे।

कार्यकारी संपादक, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

हिन्दी के वरदपुत्र – डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

डॉ.रंजीत रविशैलम

केरलीय हिन्दी साहित्य के इतिहास को बीते कल और आनेवाले कल से जोडनेवाले 'आज' की कड़ी हैं - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी। इस महा मनीषी राजकवि नायर जी को सुन्नीते व्यक्तित्व में सूर्यसमान प्रशोभित है पिछले साल प्राप्त 'पद्मश्री' अलंकरण। राष्ट्र ने उन्हें यथोचित सम्मान उनकी वृद्धावस्था में प्रदान किया है। हर केरलवासी हर वर्ष मुर्कियों में एक बात खोजता रहता था कि नायरजी को कब सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिलेगा। 'पद्मश्री' सर्वोच्च नहीं कहा पा सकता, फिर भी हमारे लिए यानि हिन्दी सेवियों के मन में बाँछें होने लगी कि अमले साल भी किसी हिन्दी मनीषी को उक्त सम्मान ज़रूर प्राप्त होगा। पथप्रदरकि हैं डॉ. नायरजी।

केरल हिन्दी प्रचार सभा में दिए गए भाषण में बहुत कुछ कहता वे याद रहे थे, मगर 'प्रौढ़ावस्था' में पहुँच चुकने का कारण शब्द गले में अटक रहे थे। फिर भी गौरवपूर्ण कई बातें सामने आ गईं। पहला, कोई भी परिश्रमी व्यक्ति उच्च सम्मान, अलंकरणादि सबकुछ यानि सभी पौरुषेय वस्तुएँ प्राप्त कर सकता है। दूसरा, उनकी निजी वस्तुताऐं किज प्रकार उनके सर्वार्पण विकास में पोषककारी सिद्ध हुई हैं। तीसरा तीखे अनुभवों का महत्व। सामान्य परिवेश में जन्मे किजी व्यक्ति केलिए ऊँचे-ऊँचे पद प्राप्त होता सपना ही लगता है। लेकिन नायरजी ने अपनी तपस्या, लगन, परिश्रम, अध्यवजाय, संगठन क्षमता, शखिलाजिता, लेखन कला आदि के ज़रिए अपने सपनों पर रंग चढा दिया।

साहित्य की विभिन्न विधाधों, यथाः उपन्यास, नाटक, कहानी, निबंध, एकांकी आदि में अपनी अमिर छाप उन्होंने छोडी। किसी भी साहित्य विद्यार्थी केलिए उनका साहित्य किसी प्रहेलिका के समान लगेगा तो पांश्तात्य की गुँजारा उसमें नहीं है। क्योंकि इतना अकूत साहित्य सर्जना आम व्यक्ति कर ही नहीं पाता। परंतू किसी देवी शक्ति का उनपर आशीर्वाद रहा होगा। कुछ भी हो उन्होंने हिन्दी साहित्य को श्रीसम्पन्न किया। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के झहथझ के रूप में युवा साहित्यकारों की प्रोंद मण्डली उन्होंने तैयार की है। आजकल उनके शिष्यों-प्रशिष्यों की रचनाऐं सग्यक् रूप से प्रकाशित हो चर्चित हो रही हैं। मेरा मानता है कि उनमें राष्ट्रवादी तत्व अधिक है। उनकी रचनाऐं 'भारतीयता' के अनुजप रची हुई होती हैं। हिन्दी, हिन्द आदि शब्द उनके अन्तर्मन में कई अनुभूतियाँ छोडती हैं। पारतंत्र्य की दुनिया से स्वातंत्र्य की दुनिया में पाँव रचने वाले किसी मेधावी व्यक्ति केलिए अभिव्यक्ति का उचित साधन साहित्य ही होता है। हिन्दी के अनेक पहलुओं, उसके सूक्ष्म तथ्यों को जाँचना-अनुर्जधान करना आदि में वे 'आनन्द' ढूँढते हैं। हमेशा साहित्य में रमना उनके व्यक्तित्व का आकर्षण तत्व रहा है।

उनके साहित्य की बात करें तो द्विवेणी (1962), कुरुक्षेत्र जगता है (1962), युग संगम (1964), सेवाश्रम (1967), देवयानी (1971), और धर्म और अथर्म (1981), सकीके नाट्य कृतियाँ, हार की जीत (1964), प्रोफेसर और रसोइया (1974) आदि कहानी संग्रह, हिमालय गरज रहा है (1956), गौरीशंकर (अनुवाद, 1981), कविताएँ देशभक्त की (1994), निषाद शंका (1998) आदि काव्य कृतियाँ, केरल प्रान्त का एकल हिन्दी महाकाव्य चिरंजीव

कमी आ जाए, लेकिन रुकने कभी नहीं है और जो रुकते नहीं हैं उन्हें अपनी मंज़िल तक पहुँचने से कोई रोक ही नहीं सकता। कुछ ऐसी ही सीख मूर्धन्य विद्वान एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा रखलेवाले पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी उनके अपनी संसार के ज़रिए दूसरों को परोस्ते है। मैं फिर से वही बात यहाँ दोहराती हूँ जिसे सभी धर्मग्रंथों में बतायी गयी है - इस दुनिया में कोई भी घटना सिवाय किसी वजह से नहीं होती। जो भी होता है उसका कोई न कोई वजह ज़रूर होती है। कर्म ही इनसान की पहचान है। •

महाकाव्य निबंध मंजूषा (1996), भारतीय साहित्य (1967), भारतीय साहित्य और कलाएँ (1967), डॉ.नायर जी की साहित्यिक रचनाएँ (1993), गाँधीजी भारत के प्रतीक आदि निबंध संग्रह, महर्षि विद्याधिराज तीर्थपाद-1983, अतीत के दिन (अनुवाद, 1987), प्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास आदि भरपूर एवं प्रभूत साहित्य उनके नाम पर दर्ज है। उनकी आत्मकथा है अनन्तपुरियुम ञानुम (मलयालम), जिसका हिन्दी अनुवाद श्रीमती कौसल्या अम्माल जी ने किया।

बतोर अनुवादक उनकी ख्याति भारतपूर्व में थी। एक बार हुई मुलाकात में मार्गदर्शन करते हुए मुझसे उन्होंने कहा - भाई तुम कुछ अनुवाद किया करो...। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की पुस्तकें मिलती हैं उससे अनुवादकला सीखा करो... क्योंकि अनुवाद करने से दक्षिण भारतीय, लेखक की वाग्विलाजिता और बढ़ने लगती हैं। सजल आँखों से मैंने उनसे एक सटीक प्रश्न किया साबजी... कई दफा आपसे मिलना हुआ... फिर आज आप इस तरह का उपदेश क्यों दे रहे हैं? तुरंत उनका उत्तर आया - मैं पात्र जानकर ही भीख देता हूँ। उन्होंने मुझे इस योग्य ममजा, इसलिए मैं उनका आभारी हूँ। उनका अनुवाद उच्चकोटि का होता है। उसका एक नमूना यहाँ प्रस्तुत है - कहा जा चुका कि केरल एक अंग्रेज़ी प्रांत बना लिया था। केरल प्रांत की काँग्रेस समिति के मंत्री की हेजियत से मैंने सबसे पहले समिति की शाखाओं की स्थापना करने और संस्था की कार्वारयों की व्यवस्था करने का यत्न किया था। प्रारंभिक खर्च केलिए - राजगोपालाचारी ने 1000 रूपये दिये थे (अतीत के दिन, पृष्ठ.62)। यहाँ उनकी भाषाई सौंदर्य पाठकों-ग्रहीतों को प्राप्त होती है। अनुवाद की भाषा से हटकर काव्य की उनकी भाषा में अनोखा वेग, ग्रहण शक्ति आदि प्रदष्च हैं-

अब सम्मुख मेरे जीवन के
दीख रहे हैं रूप अनेक
वे ज्योतिर्मय मानवता के
बाहर-भीतर हैं व्याप रहे।

-बीजवीं जदी का मानुष (कविता)

उक्त कविता की और नेहरू को श्रद्धांजलियाँ शीर्षक कविता की भाषाओं में ज़मीन आसमान का अंतर है-

हे चिरस्मरणीय,
तुम लयलीन हुये जग के
मनुज मनुज में
नवस्फूर्ति का, शक्ति का
मधुरतम स्पन्दन बन
जैसे मरकर राजा निमि
मानव के उन्मेष - विनेषों में
समा गये थे।

उक्त कविता में प्रश्न की आधुनिक प्रवृत्ति नज़र आदी है।

अश्वत्थामा बलिर्व्याजो
हनुमांश्च विभीषण
कृपः परशुरामश्च
सप्तेनै चिरंजीविनः।

उनके महाकाव्य मे स्पत चिरंजीवों के बारे में प्रबंधात्मक सजीव अभिव्यक्ति है। आठवें चिरंजीव मर्कण्डेय का ज़िक्र नहीं किया है। रस आस्वादन काव्य का लक्ष्य है तो उसका मूर्त रूप नायरजी का महाकाव्य है। कवि की कल्पना शक्ति उसकी चरमसीमा को छूते, अनेक दृष्य (दिखाना नायरजी के काव्यों की सार्वशेष विसेषता है, जैसे;

कुरुक्षेत्र अब भी होगा
जगता सच्चरित्र दिलों में
गूँजता होगा मस्तिष्क में
पांचजन्य गंभीर नाद में।

और प्रकृति रहस्यमयी माँ कविता की पंक्तियाँ हैं-

पुण्य है धरा का
उसका रोमांचित होना
रंग-बिरंगे फूलों से
मधुर मधुर मुस्कराना
नवल-नवल सुभद
ऋतुओं का विकाज होना।

नायरजी की कविताओं में प्रतिपादित एवं प्रतिभाजित भावनाएँ, विशेषकर राष्ट्रीय भावना, उनके कवि व्यक्तित्व का सबल पक्ष है।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की आत्मकहानी

डॉ.श्रीलता विष्णु

आत्मकथा लेखक का वक्तव्य कल्पनारहित सच्ची कहानी होती है। आत्मकथा एक तरह से जोखिम भरा लेखन है। इसमें कहीं तो स्वाभाविक ढंग से आत्मरलाघा की प्रवृत्ति ढाँग अड़ाती है, तो किसी के साथ शील-संकोच, आत्मप्रकाशन मे बाधा डालता है। भाषा-प्रयोग में कृत्रिमता भी आम बात है। लेकिन हर्ष की बात है कि डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की आत्मकथा अनन्तपुरियुम ञानुम उपर्योक्त दुर्बलताओं से मुक्त है। बड़े ही सुनियोजित ढंग से लिखित अनन्तपुरियुम ञानुम ईमानदारी एवं पठनीय उत्सुकता को बरकरार रखनेवाली सुरुटिपूर्ण पठनीय एवं संग्रहणीय आत्मकहानी है।

साहित्य के आख्याता, व्याख्याता तथा प्रतिष्ठाता के रूप मेकं डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर ने केरल के हिन्दी साहित्य में अपनी विशिष्ट तथा अलग पहचान बनाई है। उन्होंने अपने सुदीर्घ प्रेरक रचना-कर्म से उद्‌भूत विविधतामयी कृतियों से केरल के ही नहीददं पूरे भारतीय हिन्दी साहित्य को प्रामाणिक तथा रोचक बनाया है। साहित्य की लगभग समस्त विधाओं पर अपनी बेबाक लेखनी चलानेवाले आचार्यवर मानवीयता को ही साहित्य का ध्येय मानकर सृजवन करते रहे डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की मलयालम में लेखित आत्मकथा अनन्तपुरियुम ञानुम सन् २००८ ईं में प्रकाशित हुई। रचनाकार दार्शनिक, राष्ट्रप्रेमी, मानवतावादी, आदर्शवादी आदि रूपों में हिन्दी जगत में ख्यातिप्राप्त डॉ.नायर जी मलयालम भाषा एवं साहित्य के भी मनीषी रहे थे। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के संस्थापक नायर जी ने हिन्दी के प्रचार सभा

हिन्दी के वरदपुत्र – डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर....

नायरजी की संस्कृति संवेदना समग्र पूर्ज थी। डॉ. सुशील कुमार कोटनाला ने प्रो.एन.चन्द्रशेखरन नायर जीवन और साहित्य नामक पुस्तक में लिखते हैं - प्रोफेसर नायर के समग्र साहित्य में संस्कृत की सुस्पण्ट छाप देखी जा सकती है। वे संस्कृति को राष्ट्र का प्राण मानते हैं। संस्कृति वे अभाव में राष्ट्र केवल भीड़ भरा स्थान मान रह जाएगा। ....प्रोफेसर नायर के साहित्य में यही भारतीय संस्कृति अथवा हिन्दुत्व व्यक्त हुआ हैं। वेद, उपानिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध, जैन तथा सिक्ख दर्शन को किनारे करने के बाद भारतीय चिन्तन में कुछ भी शेष नहीं रह जाएगा। यही स्थिति नायर के साहित्य की भी है। उल्लेखनीय है कि उनके संस्कृति एवं रहन-सहन का आधार केरल भू के प्रति ऐतिहासिक दंतकथा का प्रमाणीकरण अपने महाकाव्य में उन्होंने प्रस्तुत किया है-

दंडकारण्य में श्रीराम का दर्शन कर
आये वापस केरल में परशुराम मुनीवर
अपने परशु फेंक्कर बनाये केरल में
स्वजनों को प्रदान किया शक्ति आधारित जीवन।
और प्रमाणीकरण देखिए;
कहा जाता है उन्होंने पूरे केरल में
एक सौ आठ देवगृहों की स्थापन, की
जहाँ आज कोटि कोटि जन करते हैं
आश्चर्य, पाते हैं सुखमय जीवन।

विस्तार भय से, उनके कहानीकार रूप, निबंधकार रूपों पर चर्चा करना अनुचित होगा, क्योंकि जितने उच्चकोटि के वे कवि थे, महाकवि थे, उतना ही अदा वे उपन्यासकार थे, कहानीकार थे, नाटककार थे, निबंधकार थे। साहित्य के अलावा वे चित्रकार भी थे...। हमारे ज़माने के लोगों ने कवीन्द्र रवीन्द्र को नहीं देख हैं... तो उनकी छवि हम डॉ. नायर जी में देख सकते हैं। उनकी वाणी - प्रत्यक्ष है -

वर दें कृपा करें गणेश भगवान
अति पवित्र कथा चिरंजीवों की
मन भावन की रचना दें विभों
अति विनम्रता है दया निधान।

सहायक आचार्य, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम

में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। वे साहित्य को विविध विधाओं में पचास से ज़्यादा ग्रंथों और विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित सात सौ से अधिक लेखों के प्रणेता हैं। वे राष्ट्रीय सहस्राब्दि सम्मान, पण्डित मदनमोहन मालवीय सम्मान, हिन्दी रत्न, राहुल सोकृन्यापन पुरस्कार, मुल्ला दाऊद सम्मान, महाराष्ट्रा हिन्दी साहित्य अकादमी अखिल भारतीय सम्मान जैसे पचहत्तर पुरस्कारों से सम्मानित हैं। इस वर्ष में राज्य डॉ.नायर जी को पद्मश्री पुरस्कार से भी नवाज़ा गया है। अपने जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझकर बौद्धिक साहित्यिक भूमि तक की आपकी यात्रा का क्मोनुसार रोचक वर्णन है अनन्तपुरियुम ञानुम।

आत्मकथा आत्मप्रकाशन की प्रक्रिया है। आत्मकथा हमेशा सूचनात्मक से सर्जनात्मक धरातल पर पहुँच जाती है। आत्मकथाएँ मात्र अपनी कथा न होकर एक पूरे चुत्र को प्रतिफलित करती है। आत्मकथा के माध्यम से आत्मकथाकार युगीन परिवेश तथा जीवन-मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में आत्मन्वेषण और आत्मनिरीक्षण करता है साथ ही आत्मसाक्षात्कार की उच्चभूमि पर पहुँचता है। अपने जीवन संघर्षों से प्राप्त अनुभवो की अमूल्य संपत्ति से भावी पीढियों को उपकृत करता है। इन सारे गुणों से युक्त डॉ.नायर जी की आत्मकथा एक संग्रहणीय उत्कृष्ट ग्रंथ बन जाता है।

अनवरत साहित्य-साधना के दीप्त प्रतीक डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का जन्म सन् १९२४ ईं में कोल्लम जिले के शास्तांकोट्टा में हुआ। उनका बचपन मुसीबतों एवं संघर्षों से भरा था। हैईस्कूली शिक्षी के बाद बी.ए., एम.ए., परीक्षाएँ उन्होंने स्वाध्याय रूप में उत्तीर्ण कीं। उन्होंने बिहार विश्वविद्यालय से पीएच.डी की उपाधी प्राप्त की। १९४७ ईं से १९५१ ईं तक विविध विद्यालयों में जाने हिन्दी प्राध्यापक के रूप में कार्यभार संभाला। १९५१ईं से १९८४ तक एन.एस.एस. के विविध कॉलेज में प्राध्यापक रहे थे। तिरुवनन्तपुरम के महात्मा गाँधी कॉलेज से हिन्दी विभागाध्यक्तष के पद से उन्होंने सेवा निवृत्ती पाई। १९८५ ईं से १९८७ईं तक यूजीसी रिसरच फेलो, १९८७ईं से १९८९ तक यूजीसी एमिरेट्स प्रोफसर आदि पद को वे संभालते रहे। डॉ.नायर जी गे व्यक्तित्व और कृतित्व पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से पाँच शोध प्रबंध प्रकाशित हुए हैं।

पूरे भारत में आदरप्राप्त केरलीय हिन्दी विद्वानों में वे अगुआ ही थे। छह दशाब्दियों तक फैला उनकी साहित्य सपर्या, उनथक परिश्रम एवं अचंचल आत्मविश्वास उन्हें अन्य साहित्यकारों से पृथक करते हैं। हिन्दी भाषा एवं साहित्य केलिए समर्पित व्यक्तित्व की झलक पूरी आत्मकथा में स्पष्ट परिलसित है। डॉ.नायर जी एक व्यक्ति नहीं एक संस्था है। पिछले चालीस वर्षों से उनके द्वारा सृजित संस्था केरल हिन्दी साहित्य अकादमी तथा अकादमी शोध पत्रिका हिन्दी शोधार्थियों को, लेखकों को पथ प्रदर्शन कर रही हैं।

केन्द्रसरकार के कई मंत्रालयों के हिन्दी सलाहकार समितियों में और भारत के कई सांस्कृतिक और साहित्यिक संस्थाओं में वे सदस्य रहे हैं। अपनी हिन्दी सेवा का पूरा ब्यौर पाठकों केलिए डॉ.नायर जी ने प्रस्तुत किया है। श्रीमती इन्दिरागाँधी, डॉ.शंकरदयाल शर्मा, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ.अब्दुल कलाम, डॉ.के.आर.नारायण, डॉ.मनमोहन सिंह, डॉ.करनासिंह अद्वानी जी जैसे मशहूर राजनैतिजों के साथ विचारों के आदान-प्रदान का सुयोग उन्हें प्राप्त हुआ था। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर के मानवीय मूल्यों को पहचानते में वे माहिर थे। अपने भाषणों तथा अपनी रचनाओं द्वारा भारत में शान्ति, धर्मनिरेपक्षता आदि को बरकरार रखने केलिए अनेक द्वारा किए गए प्रयास विशेष उल्लेखनीय है। हिन्दी से मलयालम और मलयालम से हिन्दी में कई ग्रंथों का अनुवाद करके भारत की भावात्मक एकता को कायम रखने का प्रयास उनके द्वारा हुआ। मलयालम कवि एम.पी.अप्पन की कविताओं को उन्होंने गौरीशंकरम शीर्षक से हिन्दी में अनुवाद किया था। हिन्दी के अग्रगण्य मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, रामधारिसिंह दिनकर जैसे अनेक साहित्यकारों से मलयालम भाषी लोग इन अनुवादों के कारण परिचित हो सके थे। अपने जीवनपर्यन्त कितने महदव्यक्तित्वों के साथ उन्होंने मित्का बनाई है सभी का नामोल्लेख इस ग्रंथ में है। तिरहत्तर महानुभावों ने नायर जी के बारे में अपने मत प्रकार

किए हैं उनका विशद परामर्श इस ग्रंथ की खूबी है। २०००ईं में अध्यात्म रामायण संस्कृत से हिन्दी में अनूदित करके प्रकाशित करवाया है। श्री.मूकांबिका देवी की कृपा से ही अध्ययन एवं अध्यापन के विभिन्न पडावों को वे पार कर सके थे, इसका अनुरणन कृति के कई अंशों में स्पष्ट भासित है।

अपनी चित्रकला के कई आयामों का भी प्रस्तुत ग्रंथ में उल्लीख है। सूक्ष्मनिरीक्षण शक्ति एवं मौलिक अन्तदृष्टि के प्रमाण है उनके द्वारा खींचा गया हर चित्र। ईसा मसीह, प्रकृति एवं पुरुष, रामकृष्ण परमहंस, मोह, तमसोमा ज्योतिर्गमय, स्वामी विवेकानन्द, एन.पी.मन्मथन शाश्वत संगीत आदि कई जीवन चित्र उनके द्वारा उकेरे गए हैं। प्रस्तुत आत्मकथा में डॉ.नायर जी के व्यक्तित्व के कई दुर्लभ गुण अनावृत होकर प्रस्तुत हुआ है। वे विद्वान भाषाविद, कोशकार, लेखक, सभी सक अध्यापक तथा गाँदीवादी हैं। परिवार के प्रति निष्ठा के साथ लेखक अपने सामाजिक परिवेश के प्रति भी समान रूप से संवेदनशील हैं।

अनन्तपुरियुम ञानुम महज एक आत्मकथा नहीं। हिन्दी केलिए समर्पित एक व्यक्तित्व की जानकारी के साथ साथ एक युग के केरल की संस्कृति एवं भारतीय भाषा संगम का इतिहास भी प्रस्तुत ग्रंथ है। अनन्तपुरि यानी तिरुवनन्तपुरम के विकास के बारे में उन्होंने लिखा है, वास्तव में जब मैं यहाँ आया था उस समय की अनन्तपुरी अब नहीं रही। इस नगर ने उससे हज़ार या दस हज़ार गुना वृद्धि की है। राजशासन से लेकर वर्तमान तक की बातों के उल्लेखों से इस नगर के विस्तृत परिवर्तन एवं परवहन की जानकारी प्रस्तुत करना ही मेरा ध्येय रहा है। अब यह नगर एक टउनषिप बन गया है। इसके अभ्युदय केलिए कार्यरत सारी संस्थाओं का नामोल्लेख बड़ी कठिन कार्य है। वि.एक.एस.सी. जैसी संस्थाएँ नगरीय विकास की गवाही दे रही है।

इस आत्मकथा में तिरुवितांकूर और केरल की आत्मा स्पंदित है। उनके व्यक्तित्व को गढने में अनन्तपुरी ने क्या भूमिका निभायी इसकी विस्तृत जानकारी इस ग्रंथ में उपलब्ध है। महामहिम अश्वितिरुनाल गौरी लक्ष्मीबाई ने अवतारिका में सुभग, सुन्दर मनोहर जैसे शब्दों में इस आत्मकथा को ससहा है। केरल राज्य की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत को पूर्णतः प्रस्तुत कृति रेखांकित करती है। डॉ.नायर जी की यह मान्यता रही है कि व्यक्तिगत साधना जितनी भी बड़ी क्यों न हो समाज से, राष्ट्र से कटते ही वह व्यर्थ और निरर्थक हो जाती है।

५१५ पृष्ठों का अत्यन्त प्रवाहमय सरल भाषा में लिखित प्रस्तुत कृति में कुल ५३ शीर्षक हैं। उनके उत्कृष्ट व्यक्तित्व एवं रचना संसार को इसमें समेटे हुए हैं। डॉ.नायर जी का मन्तव्य रहा है। कृतियों सोते हुए लेखक को जगाते है जागो उए को पैरों पर खड़ा करते हैं और खड़े इन की नसों में खून दौडाते हैं। अपने महान कर्मठ व्यक्तित्व को रेखांकित करती डॉ.नायर जी के प्रस्तुत ग्रंथ केलिए भी ये वाक्य पूर्णत चरितार्थ हो जाते है।

प्रोफसर, हिन्दी विभाग, श्रीशंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, पन्मना कॉपस, कोल्लम

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी महासचिव डॉ.एस.सुनंदा अकादमी का वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करता है।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर को यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान

बैंक ने भारत की भाषायी विविधता के बीच सौहार्द स्थापित करने के उद्देश्य से यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान प्रारम्भ किया है। वर्ष 2019-20 के लिए यह सम्मान पद्मश्री डॉ. एन चन्द्रशेखरन नायर जी, अध्यक्ष एवं संस्थापक केरल हिंदी साहित्य अकादमी को प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें ₹ 51,000/- की राशि तथा स्मृतिका प्रदान की गई। यह कार्यक्रम प्रधान कार्यालय के मार्गदर्शन में अंचल कार्यालय एर्णाकुलम के सहयोग से दिनांक 18.12.2020 को विडियो में डॉ. नायर के आवास पर ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष के रूप में श्री अजय व्यास, कार्यपालक निदेशक, श्री नरेश कुमार, महाप्रबंधक, मानव संसाधन, कार्मिक सेवा, प्रशिक्षण एवं राजभाषा, श्री रविकुमार के, अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम, श्री एम के सत्यदेवा, अंचल प्रमुख चंडीगढ़ सहित देश भर में फैले सभी राजभाषा अधिकारी तथा एर्णाकुलम अंचल के अधीन शाखाओं एवं कार्यालयों के अन्य अधिकारीगण के साथ-साथ पद्मश्री डॉ. नायर के पारिवारिक सदस्यगण एवं उनके शिष्य और प्रशंसक भी उपस्थित थे।

कोलकत्ताः यूको बैंक प्रधान कार्यालय द्वारा भारत की भाषायी विविधता के बीच सौहार्द स्थापित, करने के उद्देश्य से वर्ष 2019-20 से 'यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान' की शुरुआत की गयी है। वर्ष 2019-20 के लिए यह सम्मान मलयालम एवं हिन्दी के भारत प्रसिद्ध लेखक 96 वर्षीय पद्मश्री डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, अध्यक्ष एवं संस्थापक केरल हिन्दी साहित्य अकादमी को प्रदान किया गया। डॉ. नायर ने विभिन्न विधाओं में 60 से अधिक पुस्तकों की रचना की है। उन्हें केरलिया प्रेमचंद भी कहा जाता है। इस अवसर पर माननीय यूको बैंक के कार्यपालक निदेशक अजय व्यास द्वारा पद्मश्री डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर को 'यूको भारतीय भाषा सौहार्द सम्मान' स्वरूप शॉल, श्रीफल, 51000 की राशि तथा स्मृतिका प्रदान किया गये। उन्होंने कहा कि श्री. नायर का कृतित्व हिंद महासागर के जल से हिंद के सम्तक और हृदय को सिंचित करने जैसा है। साथ ही उन्होंने उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु - जीवेम शरदः शतम् अर्थात 100 वर्षा तक जीवित रहने की कामना की. बैंक के महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं राजभाषा, नरेश कुमार ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि 1962 में चीन के आक्रमण के बाद उनकी रचना हिमाल गरज रहा है उनके देश प्रेम के भाव को प्रदर्शित करती है। यह हिंद महासागर का अपने मस्तक हिमालय को सहयोग प्रदान करने जैसा है। प्रबंधक-राजभाषा, देहरादून अंचल अर्चना कुमारी ने मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ.एनयचन्द्रशेखरन नायर का परिचयात्मक वर्णन किया। धन्यवाद ज्ञापन अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम रविकुमार के ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुख्य प्रबंधक, राजभाषा एवं प्रभारी, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, यूको बैंक अमलशेखर करणसेठ ने किया। कार्यक्रम के दौरान यूको बैंक के सभी राजभाषा अधिकारी तथा एर्णाकुलम अंचल के अधीन शाखाओं एवं कार्यालयों के अन्य अधिकारीगण के साथ-साथ पद्मश्री डॉ.नायर के पारिवारिक सदस्यगण एवं उनके शिष्य और प्रशंसक भी वेब माध्यम से जुड़े।

श्री.वी.के.प्रशान्त, एक्स. मेयर, तिरुवनन्तपुरम कॉर്പറേഷन

सब इनस्पेक्टर पेरूरक्कडा पुलीस स्टेषन श्री.सुनिल

पेट्रन ऑफ लेक्ष्मी नगर रेसिटनषियल असोसियेषन पि.प्रभाकरन नायर

पद्मश्री डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर का हार्दिक अभिन्दन

९७ ईं जन्मदिन समारोह

पंजीयन संख्या R. No. 26957 - 1996

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर गवेषण पुरस्कार डॉ.रेमी ए.एम.को देते हैं।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर चट्टम्पीस्वामी पुरस्कार डॉ.अपर्णा सुधीर को देते हैं

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी साहित्य पुरस्कार डॉ.पंडित बन्ने को देते हैं

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।